चन्दामामा
जून १९६९
75P

इनको लाल-शर पिलाइये

(डाबर बालामृत)

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) प्राइवेट लि०, कलकत्ता-२९

चन्दामामा

जून १९६९

संपादकीय	१
चालाक	२
शंका	७
शिथिलालय	९
इलाज	१७
कालीमुर्गी	२५
लंबाड़ी	३३
बेवकूफ़ी की दवा	४३
राजदण्ड	४६
महाभारत	४९
गांधी की कहानी	५७
संसार के आश्चर्य	६१
फ़ोटो परिचय प्रतियोगिता	६४

★

कोलगेट से सांस की दुर्गंध रोकिये और दंत-क्षय का दिनभर प्रतिकार कीजिये !

क्यों कि :-एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेंटल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंत-क्षय पैदा करने वाले ८५ प्रतिशत तक रोगाणुओं को दूर कर देता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल खत्म कर देता है, और कोलगेट-विधि से खाना खाने के तुरंत बाद दांत साफ़ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का...अधिक दंत-क्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह बेमिसाल घटना है। केवल कोलगेट के पास यह प्रमाण है।

इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है—इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेंटल क्रीम से दांत साफ़ करना पसंद करते हैं।

ज़्यादा साफ़ व तरोताज़ा सांस और ज़्यादा सफ़ेद दांतों के लिए...

दुनिया में अधिक लोगों को दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही पसंद है।

DC.G.38 HN

पिंकी, बबलू, चुन्नू, मुन्नू
सब पढ़ते हैं

चंपक

और तुम ?

नया अंक पढ़ कर तो देखो! चंपक की चटपटी कहानियां, नईनई बातें सिखाने वाले लेख, मन लुभा लेने वाली पहेलियां, सूझबूझवाले बहुत से स्तंभ और छका देने वाले चीकू के कारनामे तुम्हें भी इतने पसंद आएंगे कि तुम चंपक का हर अंक खरीदे बिना न रह सकोगे!

बच्चों को देवों, दानवों, राक्षसों, जादूटोनों व छलकपट की कहानियों के जहर से बचा कर देशभक्त, साहसी व चरित्रवान बनाने वाली पत्रिका

नमूने की प्रति मुफ्त मंगाने के लिए डाक खर्च के लिए 15 पैसे के डाकटिकट रख कर यह कूपन पोस्ट कर दो :

दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-५५ :

चंपक की नमूने की प्रति इस पते पर भेज दीजिए :

नाम : ---------------------------

पता : ---------------------------

Ensure Your Success

With

ACCURACY

Other Famous Brands
of Geometry Boxes by **KASHYAPS**

DELTA, KOH-I-NOOR, HORSE

Mfg. **G. S. KASHYAP & SONS** Pataudi House, Darya Ganj, Delhi-6

ऊँचे दर्जे की

अगरबत्तियाँ

पद्मा परफ्युमरि वर्क्स, मामुलपेट,

बेंगलोर - २.

जम्मु तथा काश्मीर के लिए हमारे एजण्ट से दर्याफ्त कीजिएगा:

मिस्टर हरिचंद सुदर्शनकुमार, आर. एन. बजार, जम्मू तावी.

दांतों का सड़ना गलना तब शुरू होता है जब खाद्यकणों से पैदा हुए अम्ल पदार्थ, दांतों के इनेमल की दीवार को भेदकर दांतों के उपकरणों में घुस जाते हैं और जीवित तन्तुओं पर रोगाणुओं को आक्रमण करने का अवसर देते हैं जिसके कारण आपके दांतों में पीड़ादायक छिद्र बन जाते हैं।

बिनाका फ्लोराइड में मिला हुआ '[illegible]' दांतों के इनेमल के साथ मिलकर, उन्हें अम्ल पदार्थों का सामना करने की शक्ति देता है।

बिनाका फ्लोराइड में मिला हुआ '[illegible]' दांतों के इनेमल को नष्ट करने वाले अम्ल पदार्थों को मुंह में पैदा होने से रोकता है।

बिनाका फ्लोराइड में मिला हुआ '[illegible]' दांतों के इनेमल के साथ मिलकर, दन्त क्षय की प्रारंभिक स्थिति में दांतों में सुधार लाने और उन्हें स्वस्थ रखने में सहायता देता है।

CIBA Cosmetics

बिनाका फ़्लोराइड

दंत-क्षय और पीड़ादायक छिद्रों का प्रतिरोध करने वाली त्रिगुणा शक्ति के लिए

CIBA/CF-204 Hin

पालन पोषण सही कीजिए ;
बच्चों को बोर्नविटा दीजिए !
बढ़ने और पढ़ने वाले बच्चों के लिए हर दिन के
भोजन से मिलने वाली शक्ति काफ़ी नहीं होती।
वे जितनी शक्ति रोज प्राप्त करते हैं उतनी पढ़ने
और खेलकूद में खर्च कर डालते हैं।
बच्चों में बराबर शक्ति बनाए रखने
के लिए उन्हें हर दिन बोर्नविटा
देना चाहिए। बोर्नविटा से बच्चे
स्वस्थ तथा उत्साह पूर्ण रहते हैं।
स्वादिष्ट और पौष्टिक बोर्नविटा कोको, दूध, माल्ट
और शक्कर का सन्तुलित मिश्रण है।
शक्ति, उत्साह और स्वाद के लिए— कॅड्बरिज़ बोर्नविटा !
Cadbury's
Bournvita
the ideal food drink
for strength and vigour
450g
Bensons-0391 Hin

अरे दी दी।
जरा इसे चखो तो।
यह तो बिल्कुल रसभरी जैसा है। नींबू का पिपरमिंट और अनानास का पिपरमिंट-कितने प्रकार के-लाल, नीला, पीला आदि रंगों में! वाह भई वाह! पारले के फ्रुट ड्रॉप पिपरमिंट खाने में कितना मज़ा आता है।
पारले
फ्रुट ड्रॉप पिपरमिंट
कितना मज़ेदार ज़ायका
पारले का पैकेट खरीदो आज!
PARLE
FRUITDROPS
everest/510a/PP HN

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

इस बार फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता में एक हज़ार से अधिक पाठकों ने उत्साह के साथ भाग लिया और उनमें से अधिकांश पाठकों ने सुन्दर परिचयोक्तियाँ भेजीं। हम उन सब को धन्यवाद देते हैं।

जिन लेखकों ने हमारे पास प्रकाशनार्थ रचनाएँ भेजीं, उनमें से हम चन्दामामा के स्तर को दृष्टि में रखते हुए जो रचनाएँ हमारे लिए उपयोगी साबित होंगी, उन्हें चन्दामामा के आगामी अंकों में प्रकशित करेंगे।

वर्ष: २० जून १९६९ अंक: १०

चालाक

एक गाँव में एक अमीर किसान था। उसके दो बेटे थे। बड़ा बेटा भोला था और दूसरा होशियार था। दोनों भाई आपस में प्रेम से रहते थे। लेकिन उसके पिता के मन में यह शंका पैदा हो गयी कि जब वे दोनों बड़े होकर शादी-शुदा हो, गृहस्थी चलाने लग जायेंगे तब बड़ा बेटा अपने भोलेपन के कारण तक़लीफ़ में फँस सकता है। उस तक़लीफ़ से उसे बचाने के लिए पिता ने एक उपाय सोचा और गाँव के अधिकारी को अपने घर बुला भेजा।

अधिकारी ने आकर अमीर से उसे बुलाने का कारण पूछा। अमीर ने मुखिये से कहा–

"मैं अपनी सारी जायदाद अपने बड़े बेटे के नाम लिख देना चाहता हूँ। छोटे को एक कौड़ी भी देना नहीं चाहता।"

"तुम बेचारे छोटे के साथ अन्याय क्यों करते हो?" मुखिये ने पूछा।

"बड़ा लड़का बिलकुल भोला है। छोटा बड़ा होशियार है। इस बक़्त दोनों प्रेम से रहते हैं। मगर शादियाँ होने पर न मालूम क्या होगा, कौन जाने! तब भोला छोटे से धोखा खा सकता है! आप उन दोनों के बीच का अंतर खुद देख सकते हैं।" ये बातें कहकर अमीर ने अपने बड़े लड़के को बुला भेजा।

बड़े लड़के ने आकर पूछा–"पिताजी, मुझे किसलिए बुला भेजा?"

"देखो, बेटा! दो क़दम चौड़ा और दो क़दम गहरा गड्ढा खोदने पर उसमें से कितनी मिट्टी निकाल सकते हैं?" पिता ने भोले लड़के से पूछा।

"बड़ी टोकरी भर मिट्टी निकाल सकते हैं, पिताजी!" भोले ने झट जवाब दिया।

"अच्छा, तुम जाओ? छोटे को भेजो।" पिता ने कहा। छोटा लड़का आया। पिता ने उससे भी वही सवाल पूछा।

बिशन स्वरूप

"दो क़दम चौड़ा और दो क़दम गहरे गड्ढे से मिट्टी क्या निकलेगी, पिताजी! कुछ नहीं!" छोटे ने सोचते हुये जवाब दिया।

पिता ने छोटे लड़के को वहाँ से भेज दिया, तब मुखिये से कहा-"आपने दोनों में अंतर देखा है न? बड़ा लड़का ना समझदार है। दूसरा जहाँ भी जायगा, किसी न किसी तरह जीयेगा!"

इसके कुछ दिन बाद अमीर किसान का देहांत हो गया। गाँव के मुखिये ने दोनों भाइयों को बुलाकर कहा-"तुम्हारे पिता ने अपनी सारी जायदाद बड़े लड़के के नाम पर लिख दी! लो, यह दस्तावेज़!"

छोटे लड़के ने कभी न सोचा था कि उसका पिता उसके साथ कभी ऐसा अन्याय भी कर सकता है! वह जानता है कि उसका पिता उससे द्वेष नहीं करता था। लेकिन यह बात सच थी कि दस्तावेज़ में सारी जायदाद उसके बड़े भाई के नाम लिखी हुई है। इसलिए उसने सोचा कि इसका कोई कारण ज़रूर होगा, पर कभी न कभी उसका पता चल जायगा।

पिता ने जो इंतज़ाम किया, वह बड़े लड़के को भी अन्याय मालूम हुआ। उसने अपने छोटे भाई को समझाते हुए कहा-"भैया, सारी जायदाद मैं नहीं ले सकता।
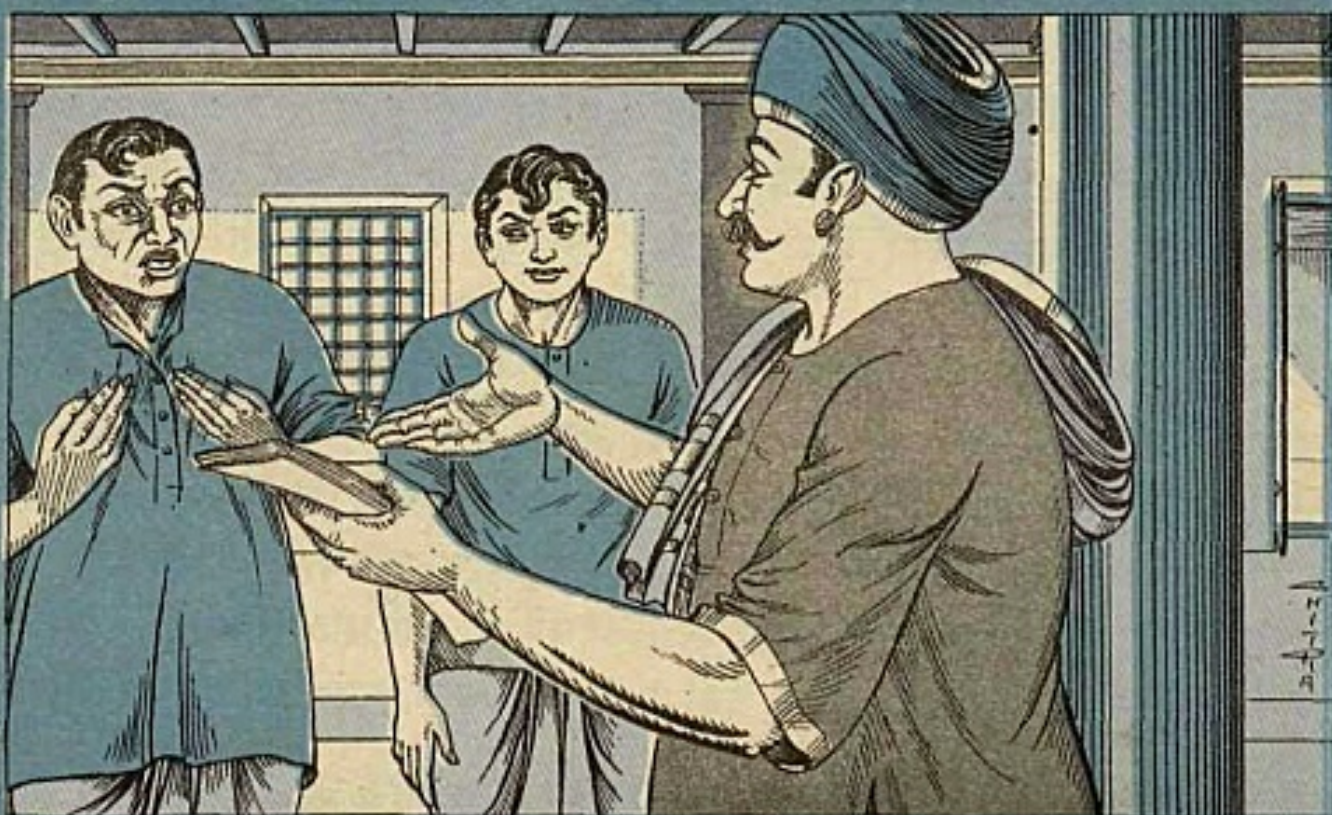
"दस लाख रुपये ख़र्च कर के राजा ने वह महल बनाया, कुछ ही दिन पहले वह बनकर तैयार हो गया। मगर उस महल में कोई भूत आ धमका है। उस भूत को गाँव के कई लोगों ने अपनी आँखों से देखा है। रात के वक़्त अगर कोई उस महल में जाता है, तो उसे डराता है। उससे डरकर कोई उस महल में क़दम रखने की हिम्मत नहीं कर पा रहा है।" गाँववालों ने छोटे को समझाया।

"इसीलिए राजा ने इतने बड़े महल को ख़ाली छोड़ रखा है?" छोटे ने आश्चर्य प्रकट किया।

"भूत को भगाने के लिए राजा ने कई होम किये, मंत्र-तंत्र कराये। मगर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। राजा ने आख़िर यह ढिंढोरा भी पिटवाया है कि अगर कोई उस भूत को भगा देगा तो उसे एक लाख रुपये का इनाम दिया जायगा। लेकिन भूतों के साथ कौन खिलवाड़ करने को तैयार होगा!" गाँववालों ने कहा।

छोटे भाई ने राजा के पास जाकर कहा—"महाराज, नये महल के भूत को एक बार देखने का मुझे मौक़ा दिलाइये। हो सका तो मैं उसे भगाने की कोशिश करूँगा।"

इसमें से आधी जायदाद मैं तुमको दे देता हूँ। हम बराबर बाँट लेंगे।"

छोटे ने बड़े भाई की बात न मानी। उसने कहा—"नहीं, ऐसा हमें कभी नहीं करना चाहिये। पिताजी ने किसी उद्देश्य से ही यह इंतज़ाम किया होगा। उसे बदलना ठीक नहीं है।"

उसी दिन छोटा भाई अपने गाँव को छोड़ जीविका की खोज में चल पड़ा। आख़िर वह एक शहर में पहुँचा। उस शहर में नया-नया बना एक महल था, लेकिन उसमें कोई निवास नहीं करता था। छोटे ने गाँववालों से उसका कारण पूछा।

राजा ने छोटे की बात मान ली।

उस रात को राजमहल के द्वार खुलवाकर छोटा भाई भीतर चला गया और भूत का इंतज़ार करते बैठा रहा।

आधी रात के समय एक धुंधली आकृति हवा में तैरती उसके सामने आयी। उसने छोटे से पूछा—"तुम कौन हो?"

"मैं चाहे कोई भी क्यों न हूँ, तुम इस महल को अपना निवास क्यों बनाये हुये हो?" छोटे ने भूत से पूछा।

"मुझे एक सवाल का जवाब चाहिये। उसका जवाब दोगे तो मैं इस महल को छोड़ सदा के लिए चला जाऊँगा।" भूत ने कहा।

"बताओ, तुम्हारा सवाल क्या है?" छोटे ने पूछा।

"दो क़दम चौड़े व दो क़दम गहरे गड्ढे से कितनी मिट्टी निकाल सकते हैं?" भूत ने पूछा।

छोटा भाई यह सवाल सुनकर चिल्ला उठा—"कुछ भी नहीं, पिताजी!"

"तुमने अच्छा जवाब दिया। अब मैं जा रहा हूँ।" भूत ने कहा।

सारी रात छोटा बेटा अपने पिता के बारे में सोचता रहा। सवेरा होते ही राजा के पास जाकर बोला—"महाराज, आपके महल से भूत को भगा दिया है।"

राजा ने आश्चर्य से पूछा—"भगा दिया! कैसे भगा दिया?"

"भूत जिस काम के लिऐ महल में आया था, वह काम मैंने पूरा किया। इसलिए चला गया।" छोटे ने कहा।

लगातार एक सप्ताह तक राजा ने उस महल में आदमियों को सोने का आदेश दिया। जब निश्चित रूप से यह पता चला कि भूत अब महल में नहीं रहता है। तब राजा ने छोटे को एक लाख रुपये का इनाम देकर अपने दरबार में नौकरी भी दी।

गाँव का मुखिया

एक गाँव में एक मुखिया था। वह बड़ा मूर्ख था। एक दिन एक किसान ने आकर मुखिये से शिकायत की—"सरकार! मेरे खेत में रोज एक साँड़ आकर सारी फ़सल चर जाता है। उसे किसी न किसी तरह भगवा देना है?"

"मैं अपने नौकर को भेजकर भगवा देता हूँ।"—मुखिये ने जवाब दिया।

"मुझे डर है कि वह सारी फ़सल कुचल न दे।" किसान ने शंका प्रकट की।

"तब तो उसे खेत के बीच तक ढोने के लिए दो और नौकर भेजता हूँ!" मुखिये ने कहा।

गाँव के कुछ किसान आपस में चर्चा करके मुखिये के पास आये और बोले—"सरकार, हमारे गाँव के बाहर के शिवमंदिर को एक गज़ पीछे सरकाने से अच्छा होगा।"

"अरे, यह कौन बड़ी बात है! सौ आदमियों को बुलाकर ढकेलवा देता हूँ।" मुखिये ने समझाया। इसके बाद मुखिये ने सौ आदमियों को ले जाकर आदेश दिया—"इस मंदिर को एक गज़ पीछे ढकेल दो।" यह काम उसके सामने ही होना था। इसलिए अपनी ज़रीदार पगड़ी उतारकर मंदिर के पीछे रखकर आगे आ खड़ा हुआ।

थोड़ी देर तक ढकेलने के बाद मुखिया यह देखने मंदिर के पीछे गया कि कहाँ तक मंदिर सरक गया है! वहाँ पर उसकी पगड़ी न थी। किसी ने चुरा ली थी।

"अबे, और न ढकेलो! मेरी पगड़ी मंदिर के नीचे दब गयी। जितना ढकेलना था, उससे एक फ़ुट ज़्यादा ही तुम लोगों ने ढकेल दिया।" मुखिये ने कहा।
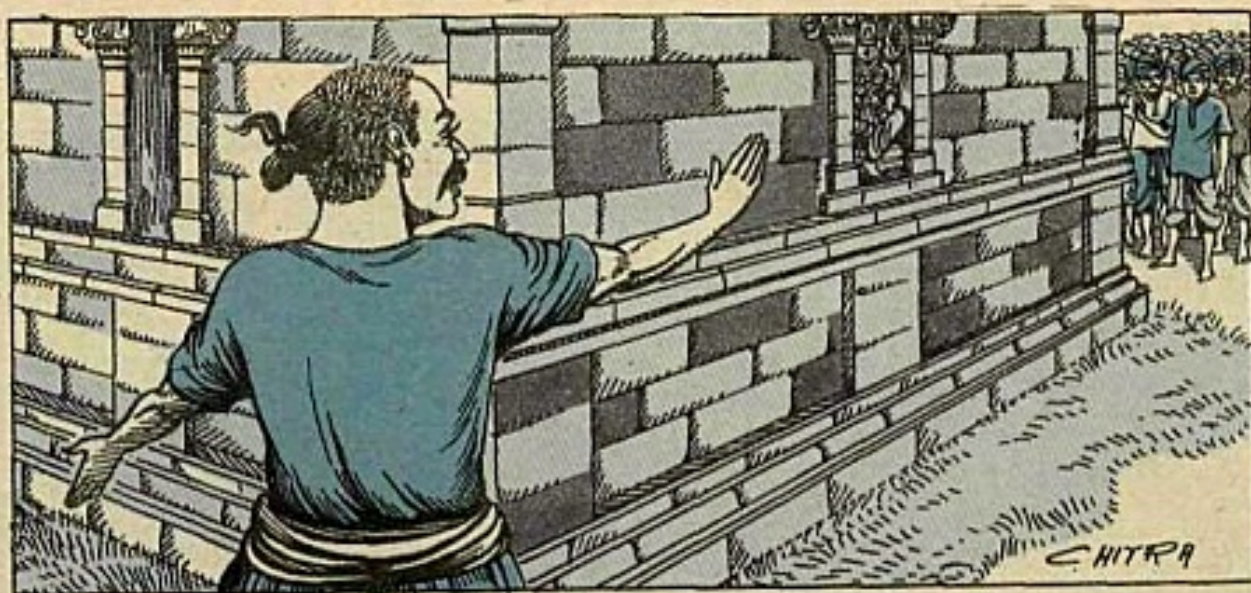
आंका

एक गाँव में एक भिखारी था। उसके मन में एक दिन यह विचार आया कि अगर कोई उसे सौ रुपया दे तो उसकी गरीबी जाती रहेगी।

इस विचार का आना था, बस वह घर-घर, द्वार-द्वार घूमकर जो भी दिखाई देता, उससे सौ रुपये माँग बैठता। भिखारी का सौ रुपये माँगना सबको मज़ाक-सा लगा। क्योंकि वह पहले पैसे ही माँगा करता था।

हर कोई भिखारी का मज़ाक उड़ा रहा था, इसलिए वह निराश हो गया। आख़िर उसने किसी दूसरे गाँव में जाकर कोशिश करने का निश्चय किया।

चलते चलते उसे दूर पर कई मकान दीख पड़े। रास्ते में जो लोग उसके सामने आये, उन लोगों से भिखारी ने पूछा–"इस गाँव का क्या नाम है?"

"अनोखा गाँव।" जवाब मिला।

उस गाँव में क्या अनोखी बातें होंगी? उनका पता लगाने के ख़्याल से भिखारी उस ग़ाँव की ओर चला। खेत में काम करनेवाले किसान ने उसे पुकारा और पूछा–"क्या तुम गाँव में जाते हो?"

भिखारी ने जवाब दिया–"हाँ, जा रहा हूँ।" "सर पर ठोकरी रखे एक औरत तुमको रास्ते में मिलेगी। उससे कह दो–तुम्हारा पति खेत में साँप के डँसने से मर गया है। उसे खाना ले जाने की जरूरत नहीं।" किसान ने कहा।

भिखारी ने किसान की बात मान ली।

किसान के कहे मुताबिक़ एक औरत सर पर टोकरी रखे सामने आयी। भिखारी ने उसको रोककर कहा–"सुनते हैं कि तुम्हारा पति खेत में साँप के डँसने से मर गया है। इसलिए उसे खाना ले जाने की जरूरत नहीं।"

गोपाल दास

भिखारी की बात सुनकर वह औरत कुछ बोली नहीं, लौटकर घर चली गयी। भिखारी को उस औरत के न रोते व चिल्लाते देख बड़ा अचरज हुआ।

भिखारी जब एक गली से गुजर रहा था, तब उसने एक चबूतरे पर एक बुजुर्ग को बैठे देखा। भिखारी को लगा कि वह आदमी उसे सौ रुपये दे सकता है।

भिखारी ने उस बुजुर्ग से सौ रुपये माँगा। उस बुजुर्ग ने घर के अन्दर जाकर सौ रुपये थैली में डाले और भिखारी के हाथ दिया। यह बात भी भिखारी को अचरज भरी मालूम हुई कि उसके पूछते ही बुजुर्ग ने सौ रुपये कैसे दे डाले!

"भाई, तुम सोचते हुए लगते हो? तुम्हारी कैसी शंका है?" बुजुर्ग ने पूछा।

"इस गाँव के आचार मेरी समझ में नहीं आ रहे हैं। एक औरत जब अपने पति के लिए खेत पर खाना ले जा रही थी, तब मैंने उसे यह समाचार सुनाया कि उसका पति खेत में साँप के काटने से मर गया है। वह औरत मेरी बात सुनकर रोये-धोये बिना चुपचाप घर लौट गयी। मैंने आपसे सौ रुपये माँगा। आपने मेरा-नाम-धाम तक पूछे बगैर मुझे रुपये दे डाले। मेरी शंका यही है कि इस गाँव के लोगों का व्यवहार ऐसा क्यों है?" भिखारी ने जवाब दिया।

बुजुर्ग ने भिखारी की बातें सुनकर कहा—"तुम्हारी बातों को सुनने से मुझे यह शंका हो रही है कि कल मैं तुमसे रुपये माँग बैठूँगा तो न मालूम तुम क्या जवाब दोगे?" यह कहते बुजुर्ग ने भिखारी के हाथ से रुपयों की थैली ले ली।

भिखारी यह सोचकर पछताते हुए दूसरे गाँव की ओर चल पड़ा कि उसने जो मूर्खता पूर्ण सवाल पूछा, उसका अच्छा सबक़ मिल गया है!

[१७]

[शिथिलालय का पुजारी अपने सेवक सबरगीध्र की मदद से नागमल्ली का अपहरणकर भाग गया। जंगल में पुजारी को घोड़ा बेचकर उसकी मदद करनेवाले चोरों को देख शिखी उनका पीछा करते चला गया। शिवाल और सबर लट्ठूसिंह घाटी में पहुँचे। उन्हें दूर पर किसी के सीठी बजाने की आवाज़ सुनाई दी। इसके बाद:—]

शिवाल ने मशाल की रोशनी की तरफ़ पल भर देखकर अपने अनुचरों से कहा—"मशाल को हिलानेवाला कौन हो सकता है? सीठी की यह आवाज़ पहले कहीं सुनी हुई लगती है!"

शबरों में से एक ने शिवाल से कहा—"साहब! जहाँ मशाल दीखता है, वहाँ पर शिकार खेलते समय गोंड नेता के आराम करनेवाली एक झोंपड़ी है। सांझ के वक़्त मैं उधर से ही आया हूँ। उस वक़्त वहाँ पर कोई न था।"

कोई मशाल को शिवाल की तरफ़ हिलाते उधर आने का संकेत करने लगा। इस बार और भी ज़ोर से सीठी की आवाज़ आयी। शिवाल ने लट्ठूसिंह से परामर्श करके अपने अनुचरों से कहा—"वह चाहे जो हो, लेकिन लगता है कि वह हमको ही बुला रहा है। चलो!"

शिवाल जब अपने अनुचरों व लट्ठूसिंह के साथ उस झोंपड़ी के निकट पहुँचा, तब वह सीठी बजाना बंदकर भीतर चला गया। शिवाल ने झोंपड़ी के दर्वाज़े पर पहुँचकर देखा। बांसों का बना दर्वाज़ा बंद था। खिड़की में से भीतर जलनेवाले मशाल की रोशनी बाहर दीख रही थी।

शिवाल ने दर्वाज़ा खटखटाते पुकारा– "भीतर कौन है? दर्वाज़ा खोल दो!"

भीतर से कोई जवाब न आया। शिवाल ने ज़ोर से दर्वाज़ा ढकेल दिया। वह बड़ी आवाज़ के साथ खुल गया। झोंपड़ी के अन्दर एक लकड़ी की मेज़ पर शिथिलालय का पुजारी बैठा था। उसने शिवाल को देखते ही विकृत रूप से हँसते कहा–"ओह! लगता है, सभी जातियों के नेता एक साथ आये हैं! स्वागत करना ही पड़ेगा मुझे! भीतर आ जाइये!"

पुजारी की हिम्मत और साहस को देख शिवाल दंग रह गया। सवर लट्ठूसिंह हुँकार करके तलवार चमकाते पुजारी पर हमला करने तैयार हो गया।

शिवाल ने लट्ठूसिंह का कंधा पकड़कर उसे रोकते हुए समझाया–"जल्दबाजी न करो, लट्ठूसिंह! हमारे हाथ आया यह दुष्ट कहीं भाग न जायगा।"

शिवाल की बातों से लट्ठूसिंह शांत हो गया। फिर भी उसकी आँखों में क्रोध की आग सुलग रही थी। ज़रा भी मौक़ा मिले तो वह पुजारी की देह के दो टुकड़े करने की सोच रहा है!

शिवाल ने शिथिलालय के पुजारी के निकट पहुँचकर कहा–"तुमने हमें जो नुक़सान पहुँचाया और जो तक़लीफ़ें दीं, वे सब तो हैं ही। साथ ही तुम सवर नेता लट्ठूसिंह की लड़की नागमल्ली का अपहरण कर चुके हो! ऐसे दुष्ट तुमको

इतनी हिम्मत के साथ हमारे बीच आते देख मुझे अचरज होता है।"

इस पर शिथिलालय का पुजारी ठठाकर हँस पड़ा और बोला–"तुम लट्ठूसिंह से कई गुने अक़्लमंद हो! मैं समझता हूँ कि अब तक तुमने मेरी ताक़त और सामर्थ्य का अंदाज़ा लगाया होगा।"

पुजारी की व्यंग्यपूर्ण हँसी और उसकी बातों में छिपी अवहेलना को देख शिवाल क्रोध से काँप उठा और उछलकर उसकी गर्दन पकड़कर गरज उठा–"शैतान कहीं के! मेरे सामने अपनी हेकड़ी न दिखाओ! बताओ जल्दी, नागमल्ली को तुमने कहाँ छिपाया?"

पुजारी कुछ कहने को हुआ, किंतु उसकी गर्दन को शिवाल के कसते वह छटपटाने लगा। शिवाल ने सोचा कि उसको मारने के पहले नागमल्ली का पता लगाना ज़रूरी है। इसलिए शिवाल ने पुजारी की गर्दन अपनी पकड़ से ढीली कर दी।

पुजारी अपने दोनों हाथों से गर्दन को सहलाते, एक बार गरज उठा। क्रोध भरी आँखों से शिवाल को देखते बोला–"शिवाल, आखिर तुमने यह साबित

किया कि तुम जंगली हो! तुम यह समझ नहीं पाते हो कि मैंने तुम्हारे दोस्त की बेटी का अपहरण करके भी, तुम लोगों को जान-बूझकर यहाँ पर क्यों बुलवाया? एक बात और! शिथिलालय के पुजारी के चरणों को छोड़ उसके शरीर के अन्य अंगों का स्पर्श कोई मानवमात्र नहीं कर सकता! ऐसे पवित्र शरीर के कंठ भाग को पकड़कर तुमने अपने तथा अपने वंश का विनाश मोल लिया है!"

"बकवास बंद करके पहले यह बताओ कि तुमने नागमल्ली को कहाँ पर छिपाया?

नहीं बताओगे तो इस बार मैं तुम्हारे तुच्छ शरीर का स्पर्श नहीं करूँगा, बल्कि मेरा पालतू लाल कुत्ता थोड़ा थोड़ा करके जब जब उसे भूख लगेगी, तब खा लेगा।" शिवाल ने समझाया।

'लालकुत्ता' शब्द सुनते ही वह कुत्ता शिवाल के निकट पहुँचा, धीरे से भूँकते हुए, शिथिलालय के पुजारी पर कूद पड़ने को तैयार हो गया! शिवाल ने उसका सर सहलाते कहा—"इस दुष्ट का शरीर ज़हर के समान है। तुम जल्दबाज़ी में आकर अपनी जान का खतरा मोलो मत। ज़रा ठहर जाओ!"

"शिवाल, मैं इस अपमान को सहन नहीं कर सकता। तुम्हारी भलाई का ख्याल रखते एक बात बताने आया हूँ। लेकिन तुम्हारा व्यवहार देख मुझे क्रोध आ रहा है। मैं अब जा रहा हूँ।" ये शब्द कहते शिथिलालय का पुजारी उठ खड़ा हुआ।

तब तक एक तरफ़ खड़े अपने क्रोध पर ज़ब्त करनेवाला सबर लट्ठूसिंह अपने को रोक न पाया। पुजारी के खड़े होते ही उछलकर उस पर कूद पड़ा। अपने दोनों हाथों से उसे ऊपर उठा ज़मीन पर पटकना चाहा। शिवाल ने झट लट्ठूसिंह के आगे जाकर, उसके हाथों में तड़पनेवाले पुजारी की कमर पकड़कर नीचे उतारा और कहा—"लट्ठूसिंह! ठहर जाओ! पहले यह जानने दो कि नागमल्ली कहाँ पर है? इसके बाद तुम अपनी इच्छा के अनुसार चाहे जो भी करो।"

शिथिलालय का पुजारी थर-थर काँपते हुये बोला—"मुझे पहले ही मालूम होता कि तुम लोग ऐसे मूर्ख हो, तो मैं यहाँ पर न आता! मैं अपने रास्ते सीधे हिमालयों में चला जाता! तुम लोग शायद नहीं समझ पाये कि नागमल्ली की जान किस तरह

ख़तरे में है। तुम दोनों मूर्ख जंगली लोगों को मारने के लिए मैं अपनी महा मंत्र-शक्ति को बेकार ख़र्च करना नहीं चाहता। यहाँ पर अगर मेरी मौत हो जायगी तो दूसरे ही क्षण नागमल्ली के शरीर के वहाँ पर टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायेंगे। यह सारा इंतज़ाम करके ही मैं तुम लोगों के बीच आया हूँ।"

पुजारी की बातें सुनते ही शिवाल और लट्टूसिंह उसकी चाल को समझ पाये। यहाँ पर पुजारी की जैसी भी हानि होगी तो उसके सेवक वहाँ पर नागमल्ली की हत्या कर बैठेंगे!...

"पुजारी, अब मुझे तुम्हारा कुतंत्र मालूम हो गया। अच्छी बात है, तुम्हारी यहाँ पर कोई हानि न होगी, अपने रास्ते चले जाओ। लेकिन यह बताओ कि तुम नागमल्ली को कहाँ पर हमारे हाथ सौंप दोगे!" शिवाल ने पूछा।

"नागमल्ली को यूँ ही तुम्हारे हाथ सौंप देना चाहता तो मैं तुम लोगों के बीच यहाँ पर आता ही क्यों? क्या मुझे पागल समझते हो? विक्रमकेसरी ने जो ताड़पत्र लाकर तुम्हारे हाथ सौंप दिया है, उनको मेरे हाथ दोगे, तो नागमल्ली प्राणों के साथ तुम लोगों के बीच आ जावेगी।

पत्रोंवाली थैली को सवेरा होने के पहले उस पीपल के पेड़ पर लटकवा दो। उसको मेरे शिष्य के लेते ही नागमल्ली तुम लोगों से आ मिलेगी।" पुजारी ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

"अपनी बात पर डटे रहोगे न?" शिवाल ने पूछा।

"इस बे मतलब के सवाल का जवाब मैंने पहले ही दे दिया है। और आध घंटे में मैं अपनी जगह पहुँच न पाया तो नागमल्ली का धड़ पीपल के पेड़ पर लटकता मिलेगा। अच्छा, जाता हूँ!... सूर्योदय के पहले...याद है न?" ये शब्द कहते शिथिलालय का पुजारी झोंपड़ी से बाहर आकर अंधेरे में ओझल हो गया।

नहीं तो कल सूर्योदय के समय उसका धड़ उस पहाड़ के नुक्कड़ पर स्थित पीपल के पेड़ पर लटकता दिखायी देगा।" शिथिलालय के पुजारी ने अपना दृढ़ निश्चय सुनाया।

"अच्छी बात है! ऐसा ही मैं अपनी बस्ती से वे ताड़ पत्र मंगाकर तुमको दे देता हूँ। लेकिन इस बात का क्या भरोसा है कि तुम नागमल्ली को छोड़ दोगे?" शिवाल ने पूछा।

"मैं जंगली नहीं हूँ। देवीजी का भक्त हूँ! देवीजी का भक्त कभी अपने वचन से मुकरता नहीं। उन ताड़-

पुजारी के चले जाते ही शिवाल ने लट्टूसिंह से कहा—"लट्टूसिंह! आखिर इस दुष्ट पुजारी ने हम पर विजय पा ली है। नागमल्ली की जान से बढ़कर ताड़पत्र नहीं हो सकते! लेकिन मुझे इस बात का दुख है कि मेरे पहले मालिक के पुत्र ने जिनको अपने प्राणों से अधिक समझकर मेरे पास भेजा, मैं उनकी रक्षा नहीं कर सका।" ये शब्द कहते दर्वाज़े के पास खड़े विक्रमकेसरी की ओर मुख़ातिब हो कहा—"विक्रम!

तुम्हारा क्या विचार है? अब तक तुम्हारे मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला?"

"आप बुजुर्ग लोग जब इस बात पर विचार कर रहे थे, तब बीच में टाँग अड़ा देना मैं ने उचित रहीं समझा। मेरी समझ में यही आता है कि नागमल्ली को बचाने के लिए ताड़तत्रों को पुजारी के हाथ सौंप देना एक मात्र उपाय है। नागमल्ली जब सुरक्षित हम लोगों में आ मिलेगी तब हम उन ताड़-पत्रों को पाने के लिए पुजारी का पीछा कर सकते हैं।" विक्रमकेसरी ने अपने विचार बताये।

"तुम जवान हो, फिर भी तुमने बड़ी अक़्लमंद की बात कही।" विक्रमकेसरी की तारीफ़ करते हुये शिवाल ने अपने अनुचर शबरों को आदेश दिया कि तुम लोग तुरंत शबरबस्ती में जाकर मेरे घर में रखे ताड़पत्रों को जल्दी ले आओ।

इस बीच में शिखिमुखी शिथिलालय के पुजारी के हाथ घोड़ा बेचनेवाले चोरों का पीछा करते जंगल में उनका घर पहुँचा। चोरों के दर्वाज़ा खटखटाते ही दर्वाज़ा खुला। शिखिमुखी ने झोंपड़ी से लगे पेड़ों की झाड़ में से खिड़की के ज़रिये भीतर झांक कर देखा। भीतर मशालों की रोशनी में उसे दो चोर और दिखायी दिये। नागमल्ली दीवार से सटी एक लकड़ी की मेज़ पर बैठी है। उसके हाथ रस्सों से बंधे हुये हैं।

उस दृश्य को देखते ही शिखिमुखी का शरीर अपाद मस्तक कांप उठा। तुरंत उसने सोचा कि भीतर जाकर उन चोरों का वध करना है। लेकिन उसके मन में यह संदेह पैदा हो गया कि ऐसा करना उस के लिए ही नहीं बल्कि नागमल्ली की जान के लिए भी ख़तरा हो सकता है। इसके बाद उसके मन में विचार आया कि जहाँ तक हो सके, वह जल्दी पहाड़ी घाटी में पहुँच

कर विक्रमकेसरी तथा कुछ और अनुचरों को साथ लाकर झोंपड़ी को घेर ले और पुजारी के अनुचरों का वध कर के नागमल्ली को छुड़ा ले जावें...

शिखिमुखी जब यह सोच रहा था तब उसके मन में यह भी विचार आया कि आख़िर पुजारी कहाँ पर है! उसका सेवक सवरगीध कहाँ चला गया है? कहीं पुजारी नागमल्ली को चोरों के हाथ सौंप कर अपने नौकर के साथ ब्रह्मपुत्र नदी की घाटियों की ओर तो भाग नहीं गया?

सोचते वक़्त बिताना शिखिमुखी के लिए अच्छा न लगा। वह खिड़की के सामने से हट कर झाड़ियों के पीछे छिपते जंगल में पहुँचा और पगडंडी पर आया। अचानक उसे घोड़ों के टापों की आवाज़ सुनायी पड़ी। शिखिमुखी झट रास्ते के बगल की झाड़ियों में जा छिपा। इतने में एक पेड़ की आड़ में से सवरगीध दौड़ता आया और चिल्ला उठा—"कौन है वहाँ? झाड़ियों के पीछे कौन छिप गया है?"

शिखिमुखी खतरे की कल्पनाकर वहाँ से थोड़ी दूर और चला। इतने में शिथिलालय का पुजारी घोड़े से तेजी से वहाँ आया और गुस्से में बोला—"कौन है, सवरगीध? चिल्लाते क्यों हो? दुश्मन को हमारी झोंपड़ी का पता बता देना चाहते हो?"

"नहीं, पुजारी देव! झाड़ियों में कोई आहट हुई!" सवरगीध हकलाते हुये बोला।

"वह आहट और कहीं नहीं हो रही है। तुम्हारी खोपड़ी में है! मना करने पर भी ताड़ी पी लेते हो! अच्छा, उस आहट का कारण जानकर जल्दी आ जाओ।" ये शब्द कहते पुजारी घोड़े को दौड़ाते चला गया।

सवरगीध अपने हाथ के भाले को चमकाते शिखिमुखी के छिपे झाड़ियों की ओर धीरे क़दम बढ़ाते चला। (और है)

इलाज़

हठी विक्रमादित्य पेड़ के पास पुनः लौट आया, पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति मौन श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने यों कहा–"राजन, कुछ ऐसी शक्तियाँ होती हैं जो दूसरों का उपकार करती हैं, पर अपनी हानि कर बैठती हैं। इसके उदाहरण स्वरूप मैं तुमको सुमंत की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।" बेताल यों कहने लगा :–

कामाख्या नगर का शासक महाराज कामपाल एक बार भयंकर चर्मव्याधि से पीड़ित हो गया। उसने कई प्रकार के इलाज़ कराये, लेकिन कोई फ़ायदा न रहा, उल्टे बीमारी बढ़ती ही गयी। राजा कामपाल इस चिंता से घुलघुलकर कमज़ोर होता गया कि उसकी बीमारी को दूर करनेवाला वैद्य राज्य-भर में कोई नहीं

वेताल कथाएँ

"आपको कोई दवा लेने की ज़रूरत न होगी। मेरे कहे मुताबिक़ व्यायाम कीजियेगा, तो बीमारी अपने आप ठीक हो जायगी। व्यायाम भी एक बार कर लेना काफ़ी है, दूसरे दिन आप बिलकुल चंगे हो जायेंगे।" सुमंत ने कहा।

राजा की समझ में न आया कि कई गोलियाँ खाने व कषाय पीने से जो बीमारी दूर न हुई, वह एक बार व्यायाम करने से कैसे दूर हो सकती है!

"तुम जो व्यायाम की बात कहते हो, उसे कब शुरू करना है?" राजा ने पूछा।

"कल सुबह ही मैं आपके दर्शन करूंगा। तब आप मेरे कहे मुताबिक़ व्यायाम कीजियेगा।" सुमंत राजा की आज्ञा ले अपने डेरे में चला गया।

उसी दिन सुमंत ने एक बढ़ई को बुलाकर लकड़ी से एक गदा तैयार कराया, उसकी मूठ पोला रखवाकर, उसमें कोई दवा डाल दी और वह मूठ गदे में बिठवा दी। दूसरे दिन सुमंत गदा लेकर राजा की सेवा में आया और बोला—"महाराज, आप इस गदा से व्यायाम कीजिये।" राजा ने गदा लेकर व्यायाम किया। थोड़ी देर बाद राजा का शरीर पसीने से एक दम तर हो गया।

है। आखिर निराश हो उसने ढिंढोरा पिटवाया कि जो वैद्य उसकी बीमारी दूर करेगा, उसे आधा राज्य दिया जायगा।

यह ढिंढोरा सुनकर बंगाल का सुमंत नामक एक वैद्य कामाख्या नगर में आया और राजा की बीमारी की जाँच करके कहा—"महाराज, मैं बहुत जल्द आपकी यह बीमारी दूर कर सकता हूँ।"

"कितने दिन इलाज कराना होगा? कैसी कैसी दवायें सेवन करनी होंगी? इसके पीछे कितने रुपये खर्च होंगे? मुझसे सारी बातें साफ़ साफ़ बता दो।" कामपाल ने वैद्य से पूछा।

"अब आप व्यायाम बंद कीजिये।" सुमंत ने राजा को रोका। उसे ले जाकर स्नान कराया, फिर सो जाने की बात कही। राजा थोड़ी ही देर में मीठी नींद लेने लगा। वह दूसरे दिन सुबह तक सोता ही रहा। जब राजा ने उठकर देखा, तब उसे आश्चर्य हुआ कि उसके शरीर पर एक भी फोड़े का दाग नहीं था। बल्कि वह सोने की भांति चमक रहा था। राजा ने अनुभव किया कि मानों उसे पुनर्जन्म प्राप्त हो गया हो!

दूसरे दिन राजा ने सुमंत को दरबार में बुलाकर कहा—"सुमंत, तुम्हारा इलाज अपूर्व है। तुम मामूली वैद्य नहीं हो, साक्षात् धन्वंतरी हो! बिना दवा का प्रयोग किये तुमने मेरा इलाज कैसे किया? हम सब इसका रहस्य जानना चाहते हैं।"

"महाराज, कल आपने व्यायाम करने के लिए जिस गदे का प्रयोग किया, उसकी मूठ में मैंने दवा भरवाई थी। वह मूठ के ज़रिये आपके शरीर में पसीने के द्वारा पहुँची जिससे आपकी बीमारी जाती रही। ऐसी असरदार दवा का प्रयोग दूसरे रूप में आपके शरीर पर करता तो आपके प्राण खतरे में पड़ जाते। उससे कम असरदार दवा इस्तेमाल करता तो

राजा ने सुमंत को अपने अंगरक्षकों में नियुक्त किया और उसके साथ भाई का सा व्यवहार करने लगा।

समय बीतता गया। एक दिन प्रधान मंत्री ने राजा से एकांत में कहा–"महाराज, मैं एक सलाह देना चाहता हूँ, पर शायद वह आपको बुरा लगे!"

"कैसी सलाह है?" राजा ने पूछा।

"वैद्य को सर चढ़ाना आपके लिए खतरनाक सिद्ध होगा! उसे तुरंत यहाँ से भिजवा दीजिये।" महामंत्री ने कहा।

"तुम जो सलाह देते हो, वह कोई माने नहीं रखती। उसने मेरा जो उपकार किया, वह भुलाया नहीं जा सकता। उसका ऋण मैं किसी भी रूप में चुका नहीं सकता। ऐसी सलाह तुम मुझे आइंदा देने की हिम्मत न करो।" राजा ने मंत्री को डाँट बतायी।

कुछ दिन बीत गये। मंत्री ने फिर वही सलाह राजा को दी।

"तुम सुमंत से क्यों जलते हो? उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?" राजा ने मंत्री से पूछा।

"उसने मेरा कुछ नहीं बिगड़ा। मैं यही सोचता हूँ कि उसके ज़रिये भविष्य

आपकी बीमारी बनी रहती।" सुमंत ने कहा।

"शहबाश! तुम जो चाहो, माँग लो! तुम्हें मुँह माँगी मुराद मिलेगी। मैंने ढिंढोरा पिटवाया था कि जो मेरी बीमारी दूर करेगा, उसे आधा राज्य दिया जायगा! तुम चाहोगे तो मैं अभी आधा राज्य दे देता हूँ।" राजा ने कहा।

"महाराज, मैं अकेला व्यक्ति हूँ। मामूली वैद्य हूँ। आधा राज्य लेकर मैं क्या करूँगा? आप की कृपा मुझ पर रहे, बस, मुझे और क्या चाहिये।" सुमंत ने विनय से कहा।

में आपको ख़तरा पैदा हो सकता है! आप साधारण व्यक्ति नहीं हैं। आप पर एक राज्य की पूरी जिम्मेदारी है। जिसने इतनी चालाकी से आपकी भयंकर बीमारी दूर की कि उसका पता तक हमको न चला। वह उसी चालाकी से आप पर ज़हर का भी प्रयोग कर सकता है। हो सकता है कि आज उसकी नीयत अच्छी हो, पर कभी उसमें राज्य हड़पने का लोभ पैदा हो सकता है! या नहीं तो हमारे दुश्मन उसे अपना जासूस बनाकर आपके प्राण के लिए खतरा पैदा कर सकते हैं! आप ख़ुद सोच सकते हैं कि वैद्य के द्वारा कैसा खतरा भविष्य में पैदा हो सकता है! आपको सावधान करना मंत्री के नाते मेरा कर्तव्य है। इसीलिए मैंने अपने मन की बात आपसे कह दी। इसमें रत्ती भर भी मेरा कोई स्वार्थ नहीं है।" महामंत्री ने राजा को समझाया।

मंत्री की बातों पर राजा ने सहसा तो विश्वास नहीं किया, लेकिन उसे यह बात सही मालूम हुई कि मंत्री की बातों में सचाई जरूर है। वास्तव में सुमंत राजा को मारना चाहेगा तो उसे कोई रोक नहीं सकता है। राजा ने जब उसे
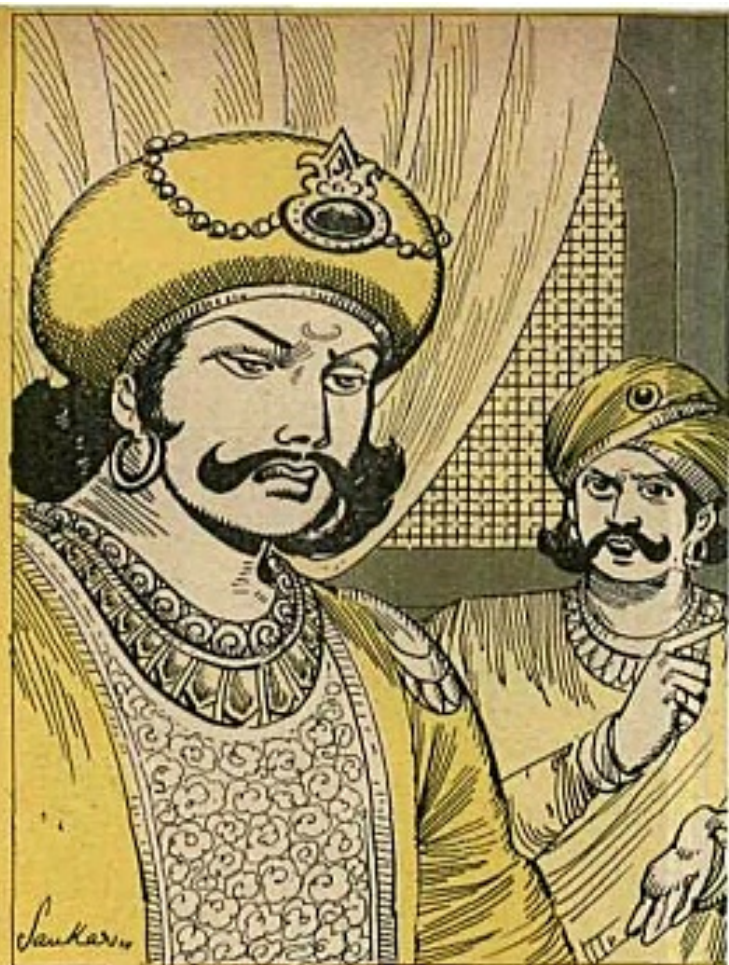
आधा राज्य देने की बात कही तो वैद्य ने लेने से इनकार किया। फिर भी पूरा राज्य हड़पने की ताक़त उसमें है। इस बात की क्या गैरंटी है कि वह राजा का विश्वास प्राप्त कर उसका प्राण हर नहीं लेगा!

राजा के मन में जब सुमंत के प्रति संदेह पैदा हो गया, तब उसके प्रत्येक कार्य में राजा को शंका होने लगी। आज तक उसे अपने अंगरक्षकों में स्थान देकर आज उसे हठात् निकाल दे तो इसका कोई जबर्दस्त कारण दिखाना होगा। वास्तव में कोई जबर्दस्त कारण दिखाने पर सुमंत

को कठोर सज़ा देना ही उचित होगा, लेकिन उसे यूँ ही भेजा देना भी ख़तरे से ख़ाली नहीं। उसे दुश्मन बनाकर ज़िंदा रखना भी खतरनाक हो सकता है!

इसलिए राजा ने सुमंत को मार डालने का ही निर्णय किया। राजा ने इस संबंध में जब मंत्री से सलाह ली, तब उसने कहा—"महाराज, सुमंत बड़ा शक्तिशाली है! आप उसको जो भी दण्ड देना चाहे तो उसे आप गुप्त रखिये। उसे मार डालना अन्याय ही है, परंतु आप की तथा राज्य की भलाई के लिए ऐसा अन्याय करना उचित ही होगा।" मंत्री ने समझाया।

उस दिन आधी रात को राजा ने हठात अपने भटों को भेजकर सुमंत को राजमहल में बुला भेजा।

"महाराज, इस आधी रात के समय आपने मुझे जबर्दस्ती बुला भेजा। क्या मैं इसका कारण जान सकता हूँ?" सुमंत ने राजा से पूछा।

"मैंने तुरंत तुमको मार डालने का निश्चय किया। तुम्हारा सर काटने के लिए वधिक तैयार है।" राजा ने कहा।

"मैंने आपके साथ कौन-सा द्रोह किया? आखिर इस सज़ा का कोई कारण भी तो हो?" सुमंत ने पूछा।

"तुम मेरे साथ जो द्रोह करने जा रहे हो, उस के लिए यही सज़ा है! सबकी आँख बचा कर तुमने मेरे शरीर में औषध का प्रयोग किया, वैसे ही तुम ज़हर का भी प्रयोग कर सकते हो न? तुम्हारे ज़रिये मुझे किसी भी क्षणा ख़तरा पैदा हो सकता है! इसलिए तुम्हारा सर काटने पर ही मैं निश्चितता के साथ रह सकता हूँ।" राजा ने मन की बात कही।

"अगर आपको मेरा जिंदा रहना खतरनाक है, तो मैं बड़ी खुशी से अपने प्राणों की बलि दे सकता हूँ। इस मौक़े

का लाभ उठाकर मैं आपको एक अच्छे मंत्र का प्रभाव दिखा सकता हूँ। मेरे घर पर एक पुराना ताड़पत्रोंवाला ग्रन्थ है। उसमें एक मंत्र है। मेरा सर काटने के बाद आप उस मंत्र को पढ़कर सवाल पूछेंगे तो मेरा सर उनका जवाब दे सकता है!" सुमंत ने कहा। राजा के मन में लोभ पैदा हुआ। सुमंत की शक्तियों पर राजा का अपार विश्वास है। उससे पूछा—"वह ग्रन्थ ला दो तो!"

"आप भटों के साथ मुझे अपने घर भेज दें तो मैं ढूँढकर वह ताड़पत्रोंवाला ग्रन्थ ला सकता हूँ।" सुमंत ने जवाब दिया।

राजा ने मान लिया। सुमंत ने राजभटों के साथ घर पहुँच कर उनको बाहर खड़ा कर दिया। उसने भीतर जाकर ताड़पत्रों वाले ग्रन्थ के पन्नों पर जहर मल दिया। उसे लेकर राजा के पास लौट आया और बोला—"महाराज, इस ग्रन्थ को ढूँढने में देरी हो गयी। आप मुझे क्षमा करें। यही वह ग्रन्थ है। आप हाथ साफ़ कर आइये। एक एक करके गिनकर बीसवाँ पन्ना निकालिये, उसमें वह मंत्र आपको दिखायी देगा।"

राजा ने तुरंत जाकर हाथ साफ़ किये। लौट कर ताड़पत्रों का एक एक पन्ना गिनकर उलटने लगा। राजा ने दस ही

पन्ने पलटे कि उसकी नसें तन गयीं। बीसवें पन्ने तक पहुँचते पहुँचते वह लुढ़क कर ज़मीन पर गिरा और मर गया।

सुमंत राजा के कमरे से बाहर आया और राजभटों से बोला–"राजा सो रहे हैं। कल सुबह आकर मैं उनके दर्शन करूँगा।" यह कहकर सुमंत अपना घर चला गया। अपनी चीज़ों की गठरी बांध ली और सवेरा होने के पहले ही वह राज्य की सीमा पारकर चला गया।

बेताल ने यह कहानी सुना कर कहा–"राजन् कामपाल की मौत का जिम्मेवार कौन है! आकारण ही राजा के मन में संदेह पैदा करनेवाला मंत्री है? या मंत्री ने पहले ही राजा को बताया था कि सुमंत राजा की जान लेगा, इसलिए सुमंत ही है? इस सवाल का जवाब जानते हुये भी न बताओगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने जवाब दिया–"अपनी जान पर खतरा आने तक सुमंत के मन में राजा को मारने का कुविचार नहीं आया। इसीलिए वह निर्दोष है! यह कहना उचित ही होगा कि मंत्री का भी इसमें कोई दोष नहीं है। राजा की भलाई का ख्याल रखते हुये उसने सुमंत से सावधान रहने की राजा को सलाह दी। यह सलाह देना उसका कर्तव्य भी है। लेकिन राजा ने खुद अपनी मौत मोल ली। मंत्री ने जब पहली बार सलाह दी, तब उसने उसकी परवाह नहीं की। उसकी सलाह मानकर राजा को तुरंत सुमंत का सर कटवा देना था। परंतु ऐसा न करके उसे घर जाने दिया। मंत्री की सलाह का राजा हू ब हू पालन करता तो उसकी बुरी मौत न हुई होती।"

राजा के इस प्रकार मौनभंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

काली मुर्गी

विदर्भ राजा से कई इनाम पाकर भील युवक सुमंग भीलों की बस्ती में बड़ा मशहूर हो गया। उस बस्ती में यह भी अफवाह फैल गयी कि सुमंग के पास बहुत सारा सोना है, इसलिए विदर्भ राजा विजयेन्द्र ने अपनी बेटी का विवाह सुमंग के साथ करने की इच्छा प्रकट की, तो सुमंग ने इनकार किया, वगैरह! भील बस्ती की कई जवान लड़कियाँ सुमंग के साथ शादी करने को ललचा गयीं, लेकिन उसको उनमें एक भी पसंद न आयी।

सुमंग की माँ रोज़ उसको समझा देती—"बेटा, किसी अच्छी लड़की को देख जल्द शादी करो, कितने दिन बिना शादी के रहोगे?"

"मेरे पसंद की लड़की दिखायी देने पर मैं शादी करना चाहता हूँ, माँ! मगर मुझे एक भी लड़की पसंद न आयी। क्या करूँ? तुम्हीं बताओ!" सुमंग माँ के सवाल का जवाब देता।

"तुमको पसंद आनेवाली लड़की न मालूम इस भूमि पर पैदा हो गयी कि नहीं!" माँ खीझकर कह देती।

माँ की यह बात सुनते ही सुमंग के मन में यह ख़्याल आया कि अपनी पत्नी बननेवाली लड़की की खोज़ उसे ख़ुद करनी है। उसकी पसंद की लड़की उसे खोजते थोड़े ही उसके पास आवेगी!

"माँ! मैं अपनी पत्नी की खोज़ में जाता हूँ!" एक दिन सुमंग ने कहा।

"अकेले लौटोगे तो मैं नहीं मानूँगी! बहू को साथ लेकर ही आना।" माँ ने कहा।

सुमंग जंगल से होकर निकला। हर कोस पर एक भील बस्ती है। हर बस्ती में शादी के योग्य कई युवतियाँ हैं। उनमें एक भी सुमंग को पसंद न आयी।

कुमारी माला गंगूली

"मैं जिस युवती से शादी करूँगा, वह अपने ढंग की अकेली हो! ऐसी हो, मानों आसमान से टपक पड़ी हो!" सुमंग ने मन ही मन सोचा।

आठ दस दिन सफ़र करके सुमंग एक दिन दुपहर को एक भील बस्ती में पहुँचा। उसमें दस-बारह झोंपड़ियाँ थीं। बस्ती के लोग काम पर चले गये थे।

सुमंग ने खिड़की में से एक झोंपड़ी में झांककर देखा। झोंपड़ी के भीतर एक जवान लड़की रसोई बना रही थी। उसको देखते ही मानों सुमंग का कलेजा रुक-सा गया। उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि लड़कियाँ ऐसी सुंदर भी होती हैं! वह ऐसी लगती थी, मानों किसी साँचे में ढली हुई हो! उसको इधर-उधर चलते देख सुमंग को विदर्भ के राजा के दरबार की नर्तकियाँ याद आयीं।

"मैं इस लड़की को छोड़ किसी दूसरी से शादी नहीं करूँगा।" सुमंग ने मन में सोचा।

ऐसा मालूम हुआ कि सुमंग के मन की बात उस लड़की को सुनाई दी हो और उसने सर उठाकर सुमंग को देखा, धीरे से चिल्लाकर वह लड़की दूसरे क्षण गायब हो गयी।

सुमंग चकित रह गया। उसने झोंपड़ी के पास जाकर दर्वाज़ा ढकेला और पूछा—"भीतर कौन है?" दर्वाज़ा खोलते ही एक काली मुर्गी 'के के के' करते बाहर भाग गयी। झोंपड़ी के भीतर कोई न था। सुमंग को संदेह हुआ कि शायद यह उसका भ्रम हो! लेकिन उस लड़की का चेहरा अब भी उसकी आँखों के सामने थिरक रहा था। उसने सारी झोंपड़ी खोज डाली। वह जिस कमरे में दिखायी दी थी, उस कमरे में अभी अभी बनायी गयी रसोई थी। अगर उस लड़की ने रसोई

पकायी न हो तो यह किसका काम होगा? उसका सही पता लगाने का निश्चय कर सुमंग उसी झोंपड़ी में बैठ गया। थोड़ी देर बाद उस झोंपड़ी में एक बूढ़ी और एक बूढ़ा आये।

"बड़ी दूर से आया हूँ। भूख लगी है। थोड़ा खाना खिलाइये।" सुमंग ने उन बूढ़ों से पूछा।

"अच्छी बात है, बेटा! थोड़ा ठहर जाओ!" बूढ़ी ने रसोई में जाते कहा।

"आपको रसोई बनाकर खिलानेवाली लड़की कौन है? बेटी है या पोती?" सुमंग ने बूढ़े से पूछा।

बूढ़े का चेहरा सफ़ेद पड़ गया। उसने अचरज में आकर कहा—"इस घर में हम दोनों जीव रहते हैं, बेटा!"

"आप डर के मारे झूठ बोलते हैं। मैंने उस लड़की को देखा है। उससे शादी करने के ख्याल से पूछता हूँ! मैं कोई भिखारी नहीं हूँ! सच बताइये।" सुमंग ने कहा।

"तुम जिस लड़की की बात कहते हो, उसे हमने कभी नहीं देखा। सचमुच मैं उस लड़की के बारे में कुछ नहीं जानता।" बूढ़े ने कहा।
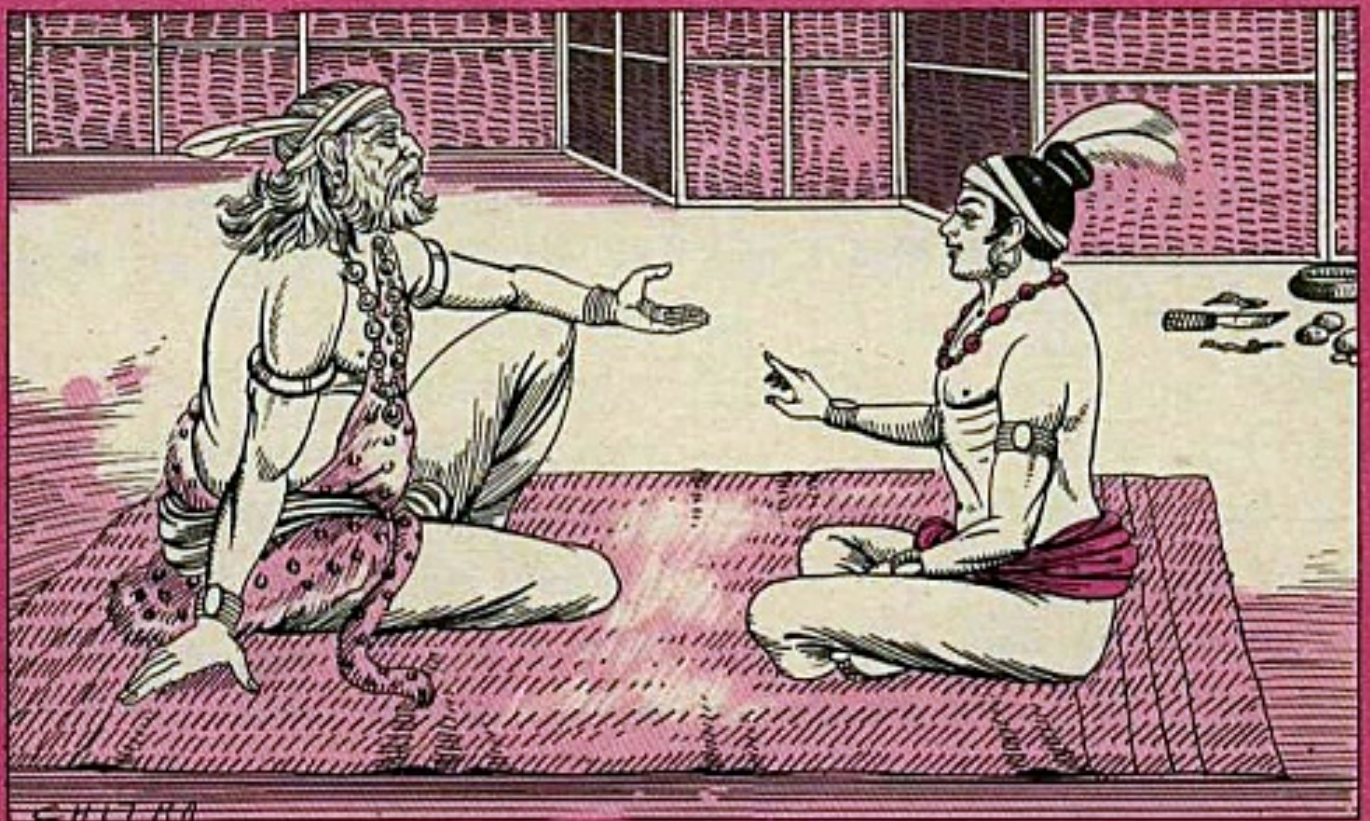
"तब तो दोनों जब खेत में काम करने जाते हैं तो आपकी रसोई बनानेवाली कौन है?" सुमंग ने पूछा।

"यह बात हमारी भी समझ में नहीं आ रही है। रोज हमारे जागने के पहले और फिर शाम को खेत से लौटने के पहले रसोई बनकर तैयार रहती है। हम बिलकुल नहीं जानते कि कौन रसोई बनाती है।" बूढ़े ने कहा।

"कितने दिनों से ऐसा होता है?" सुमंग ने पूछा।

"आठ-दस दिन पहले कहीं से कोई काली मुर्गी आयी। हमने कई लोगों से पूछा कि यह किसकी है? सभी ने यही कहा कि हमारी नहीं है। वह मुर्गी अण्डे भी नहीं देती। हमने सोचा कि किसी बनदेवी ने हमारी मदद करने भेजा है। उस दिन से हमारी रसोई खुद तैयार हो जाती है।" बूढ़े ने कहा।

सुमंग ने उन बूढ़ों के साथ खाना खाया। उनसे उस रात को वहीं पर सोने की अनुमति लेकर लेट गया।

सोने के लिए जाने के पहले बूढ़ी ने काली मुर्गी को चारा डाला और उसे एक टोकरे के नीचे रखा।

उस रात को सुमंग को नींद न आयी। आधी रात बीतने पर कोई आहट हुई। सुमंग ने सर उठाकर देखा। काली मुर्गी टोकरे से बाहर आयी और रसोई की ओर चली गयी। सुमंग धीरे से उठा। दबे पाँव रसोई के दर्वाजे तक पहुँचकर भीतर झांका।

मुर्गी ने एक बार अपने शरीर को झाड़ा। उसका कलेवर नीचे गिर पड़ा। उसमें से वही लड़की बाहर आयी जिसको कल दुपहर सुमंग ने देखा था। वह धीरे रसोई में जुट गयी। सुमंग बड़ी देर तक पलक न झपकाये उसकी ओर ताकता

रहा। उसकी ख़ूबसूरती देखने लायक़ थी। जो कुछ करना है, उसने निश्चय किया, फिर अपनी जगह आकर लेट गया। सवेरा होते ही बूढ़े से विदा लेते हुए उसने सोने की एक अशर्फ़ी उसके हाथ में धर दी और पूछा–"आप अपनी काली मुर्गी मेरे हाथ बेच दीजिये।"

बूढ़ा घबराये हुये बोला–"क्या मुर्गी का इतना ज़्यादा दाम होगा? वह अण्डे भी नहीं देती, तुम्हारे कौन काम आवेगी? हमारे तो कोई बच्चा नहीं हैं, इसलिए पालते हैं।"

"मुझे मुर्गी को देखते ही ख़रीदने का मन हुआ। चाहो तो एक अशर्फ़ी और ले लो! लेकिन यह मुर्गी मेरे हाथ तुमको बेचना ही पड़ेगा।" सुमंग ने कहा।

उन बूढ़ों की गरीबी दूर होने के लिए दो अशर्फ़ियाँ काफ़ी थीं। इसलिए बूढ़ों ने बड़ी खुशी से वह मुर्गी सुमंग को दी। वह उस मुर्गी को बगल में दाबे चल पड़ा।

"अरे बेटा, बहू कहाँ? मैंने नहीं कहा था कि अकेले घर नहीं लौटना?" माँ ने सुमंग से पूछा।

"मैं अकेला कहाँ आया, माँ! लो, यह मेरी औरत!" यह कहते सुमंग ने मुर्गी

दिखायी। सुमंग की माँ ने सोचा कि उसका बेटा पागल हो गया है। लेकिन वह पागल जैसा दीख नहीं रहा था। इसलिए उसने सोचा कि वह उससे मजाक कर रहा है! उसने जब निर्णय किया कि सचमुच सुमंग मुर्गी से शादी करने पर तुला हुआ है, तब उसे यह डर सताने लगा कि बस्ती के लोग उसे और उसके लड़के को पागल समझकर बस्ती से निकाल बाहर कर देंगे। वह परेशान रहने लगी।

उस दिन आधी रात को काली मुर्गी अपनी आदत के मुताबिक़ रसोई में जाकर जब लड़की बनी, तब सुमंग ने उसके पीछे

जाकर उससे गले लगाया और पूछा— "तुम कौन हो? तुम्हारा क्या नाम है? तुम मुर्गी और लड़की बदल-बदल कर क्यों बनती हो?" वह लड़की सुमंग की पकड़ से छुड़ाने को छटपटायी।

"मैं तुमको नहीं छोड़ सकता। तुम्हारे साथ शादी करने के लिए तुमको यहाँ ले आया हूँ। तुम्हें अपना पूरा समाचार मुझे बताना ही होगा।" सुमंग ने हट किया।

"मैं एक भील नेता की लड़की हूँ। मेरा नाम जंत्री है। मेरी बस्ती के जादूगर ने मुझसे शादी करनी चाही। मैंने इनकार किया। तब उसने मुझे मुर्गी बनायी। मैं दुपहर और आधी रात के वक़्त ही औरत बन सकती हूँ। अगर उस समय के बीतने के पहले मैं मुर्गी के कलेवर में न पहुँच सकूँगी तो मर जाऊँगी। मुर्गी के रूप में रहते वक़्त यदि कोई मुझसे शादी करने को तैयार हो जायगा तो मेरा शाप जाता रहेगा।" जंत्री ने सारा रहस्य बताया।

"अच्छी बात है। मैं तुम्हारा शाप दूर करूँगा। तुम डरो मत!" सुमंग ने हिम्मत बंधाई।

यह बात सुनते ही जंत्री के मन में सुमंग के प्रति बड़ा प्रेम पैदा हुआ।

उन दोनों की बातें सुनते ही सुमंग की माँ जाग पड़ी। उसने रसोई में झांक कर देखा। उसका बेटा परी जैसी एक कन्या को आलिंगन करते दिखाई पड़ा। पहले उसकी समझ में कुछ नहीं आया। लेकिन थोड़ी दूर पर काली मुर्गी का कलेवर देखते ही उसकी समझ में सारी बातें आ गयीं। वह दबे पाँव भीतर पहुँची। मुर्गी का कलेवर लेकर उनकी आँख बचाकर बाहर आयी। बस्ती के बाहर जो अलाव था, उसकी आग में मुर्गी का कलेवर डाल दिया। दूसरे ही क्षण जंत्री जोर से चिल्लाते

तड़पने लगी। "क्या हुआ, जंत्री?" सुमंग ने घबड़ाये पूछा।

"मेरा शरीर ज़ल रहा है। मेरी मुर्गी के कलेवर को किसी ने आग में डाल दिया है।" जंत्री पीड़ा से तड़पने लगी।

उसने जो कलेवर छोड़ा था, वह वहाँ न था। सुमंग ने बाहर जाकर देखा कि उसकी माँ कलेवर को आग में जलाने जा रही है। सुमंग ने दौड़कर मुर्गी का कलेवर हाथ में लिया और जले हुये भाग को हाथ से मलने लगा। कलेवर पूरा जल न पाया था।

सुमंग अपनी माँ की पुकार पर ध्यान दिये बिना झोंपड़ी के भीतर लौट आया। अब जंत्री को आराम मिला। उसने मुर्गी के कलेवर में फिर प्रवेश किया।

सवेरा होते ही सुमंग मुर्गी को साथ ले भीलों की सभा में गया। भीलों के नेता के सामने घुटने टेक कर प्रार्थना की—"हुज़ूर! इस मुर्गी के साथ मेरी शादी करा दीजिये।"

कुछ भील सुमंग की बात सुनकर हँस पड़े। कुछ ने उसे गालियाँ दीं और मजाक उड़ाया। कुछ ने बताया कि यह भीलों का अपमान कर रहा है। एक ने कहा—"अबे, कई ख़ूबसूरत लड़कियाँ तुम से शादी करने को तैयार बैठी हैं। तुम्हें

धन की कमी नहीं है, चाहो तो दस लड़कियों के साथ शादी करो। लेकिन यह क्या, मुर्गी के साथ शादी करना चाहते हो? पागल तो नहीं हुये हो?"

"मैं इस मुर्गी के साथ ही शादी करनेवाला हूँ। असली बात तुम लोगों को जल्द मालूम हो जायगी।" सुमंग ने अपना दृढ़ निश्चय सुनाया।

"ऐसा काम करोगे तो तुम्हें और तुम्हारी माँ को बिरादरी से बाहर करने का भील सभा को अधिकार है, बेटा! याद रखो।" भील नेता ने समझाया।

"आप लोग मेरे मुर्गी के साथ शादी करने पर ही बिरादरी से बाहर करनेवाले हैं? पहले मेरी शादी तो कीजिये। बाद को मुझे बिरादरी से बाहर तो नहीं करेंगे, उल्टे सब लोग जलसा मनायेंगे। मेरी बात पर यक़ीन कीजिये।" सुमंग ने निवेदन किया।

तब भी कुछ लोगों ने शादी को रोकने की कोशिश की। लेकिन भील नेता सुमंग को बहुत चाहता था। इसलिए उसने फ़ैसला किया। पहले हम सुमंग की शादी करेंगे, फिर भील-सभा निर्णय करे तो उसे बिरादरी से बाहर करेंगे।

भील पुरोहित ने शादी का इंतज़ाम करके मंत्र पढ़ा। उन मंत्रों के पूरा होने के पहले ही जंत्री अपनी मुर्गी का कलेवर छोड़कर दुलहिन के वस्त्रों में प्रत्यक्ष हो गयी। सब की आँखें चकाचौंध हो गयीं।

सुमंग के कहे अनुसार सारी भील बस्ती ने जलसा मनाया। यह बात मालूम होते ही जंत्री का बाप छे कोस की दूरी से दौड़ा दौड़ा आया। सुमंग की बस्ती के लोगों को कटार, भाले, ढेल-बाँस, बाण, कपड़े, मोर-पंख, हाथी दांत के औज़ार, शहद, चन्दन आदि इनाम बाँटे और बेटी और दामाद को दिल खोलकर आशीर्वाद दिये।

लंबाड़ी

पुराने ज़माने के राजा लड़ाई के नाम से डरते थे, लेकिन उनमें अपने से छोटे राजाओं को जीतने की लालच बनी रहती थी। कुछ राजा ऐसे होते थे जो दूसरे राज्यों को हड़पने के लिए जुआ खेलने निमंत्रण देते थे। कुछ ऐसे भी राजा थे, जो जिन राज्यों को जीतना चाहते, उन के राजाओं की परीक्षायें लेते और उनमें हारने से उनके राज्य हड़प लेते।

शमंत देश का राजा कमलनाभ अपने पड़ोसी राजा प्रसेन को जीतना चाहता था, उसके राज्य को हड़पने का उसने मन में निश्चय कर लिया। राजा कमलनाभ प्रसेन से बलवान था, लेकिन उसका ख्याल था कि लड़ाई करने से प्रजा और धन का भी नुक़सान होगा। जनता का जीवन अस्त-व्यस्त हो जायगा। सब पेशवर लोगों की हानि होगी। पुनः दोनों देशों के ऊपर उठने में काफ़ी समय लगेगा। इस बीच एक और देश का राजा उन पर हमला करके दोनों राज्यों पर अधिकार भी कर सकता है। ये सब बातें सोचकर कमलनाभ ने प्रसेन के पास एक सवाल भेजा–"हम दोनों दो रथ तैयार करवा कर एक बाजी रखेंगे। जिस देश का रथ तेजी से जायगा, उसकी जीत मानी जायगी। दूसरा देश हारा समझा जायगा।"

प्रसेन को यह शर्त माननी पड़ी। अगर वह न मानता तो कमलनाभ उसके देश पर फौज भेजकर उसकी दुर्दशा कर बैठेगा।

यह विचार करके प्रसेन ने अपने राज्य के प्रमुख बढ़ई व लुहारों को बुला भेजा और उनसे कहा–"तुम सब लोग अमुक समय के अन्दर एक बहुत बड़ा रथ तैयार कर दो। वह मज़बूत हो, तेज़ी से दौड़ भी सके।

गजेन्द्र कुमार
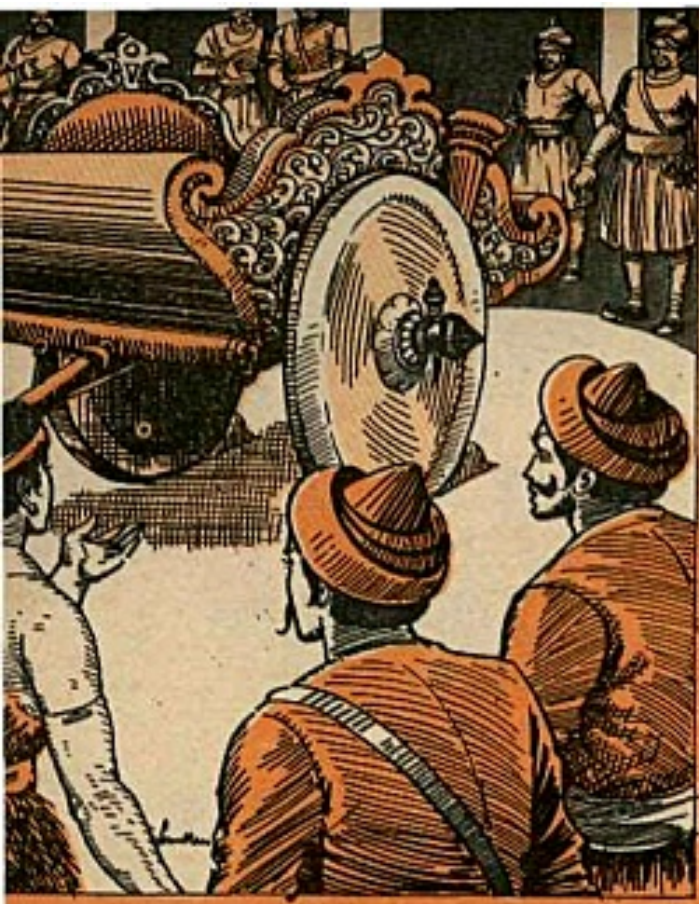
तुम लोग जो रथ तैयार करोगे, उनमें से बढ़िया रथ को इनाम दिया जायगा।"

तुरंत बढ़ई व लुहारों ने रथ तैयार करना शुरू किया। उनमें एक आदमी लुहारगिरी में बड़ा मशहूर था। वास्तव में वह भी सब लोगों की तरह मामूली लुहार था, लेकिन उसके पास एक होशियार जवान था। लुहार के काम में वह बड़ा प्रवीण था। वैसे वह सभी बातों में अक़्लमंद भी था। वह किस जाति का था, कोई नहीं जानता था। वह बच्चपन से अनाथ बालक था। उसके कोई नाम भी न था। पर लुहार उसे "लंबाड़ी" नाम से पुकारता था। वही बाद को उसका नाम बना। लंबाड़ी की कारीगरी से उसके मालिक ने काफ़ी धन कमाया। फिर लंबाड़ी बिना वेतन-भत्ते का नौकर बनकर रह गया।

राजा के आदेशानुसार जो रथ तैयार करना था, उसे लंबाड़ी ने ही बनाया। क़िले के सामने रथ खड़ा कर दिया गया। उसे देखने लोगों की भीड़ उमड़ रही थी। लेकिन छोटा बालक भी अगर उस रथ को ढकेलता, वह चलता था। राजदरबार के अफ़सर उस रथ की तारीफ़ कर रहे थे।

"ऐसा रथ दुनिया-भर में दूसरा न होगा। जीत निश्चय हमारी है।" एक ने कहा।

"अरे, इस रथ में हमारे राजा के सफ़ेद घोड़े जुते जाये तो क्या कहना।" दूसरे ने कहा। लंबाड़ी ने उनकी बातों को काटते हुए कहा–"उन सफ़ेद घोड़ों की नाल में ही लगा दूँ तो बस देख लेना, वे घोड़े कैसे दौड़ते हैं?"

राज-दरबार के अफ़सरों ने उससे पूछा–"तुम कौन हो और इसके साथ तुम्हारा क्या सरोकार है?"

"मैंने ही यह रथ बनाया है।" लंबाड़ी ने कहा।

"अरे इस रथ के बनानेवाले को राजा ने बड़ा इनाम दिया है। इसका मतलब तुम बड़े अमीर हो।" अफ़सरों ने उससे पूछा।

"वह सारा इनाम मेरे मालिक ने लिया है। मुझे एक कौड़ी भी हाथ न लगी।" लंबाड़ी ने उत्तर दिया।

अफ़सर यह बात सुनकर चकित हुए और लंबाड़ी को राजा के पास ले गये। राजा ने अफ़सरों के मुंह से सारी बातें सुनकर लंबाड़ी से कहा-"अगर यह बात सच हो कि तुमने ही रथ बनाया और इनाम तुम्हारे मालिक ने तुमको नहीं दिया तो मैं इसका फ़ैसला करके तुम्हारे मालिक को कड़ी सजा दूंगा।"

"इस वक़्त मैं इनाम नहीं चाहता। आप मुझे घोड़ों की नाल लगाने का काम सौंप दीजिये। वे घोड़े वायु वेग से दौड़कर बाजी जीत लेंगे।" लंबाड़ी ने कहा। राजा ने उसकी बात मान ली।

पूर्व निश्चित योजना के अनुसार दोनों देशों की सीमा पर दोनों राज्यों के रथों में दौड़ शुरू हुई। प्रसेन के रथ की जीत हुई। अपने रथ की हार से नाराज़ होकर कमलनाभ के रथ के सारथी ने तेज़ी से आकर विजय की सीमा पर खड़े प्रसेन के रथ से टकरा दिया। इस टकराहट से कमलनाभ के रथ की धुरी टूट गयी
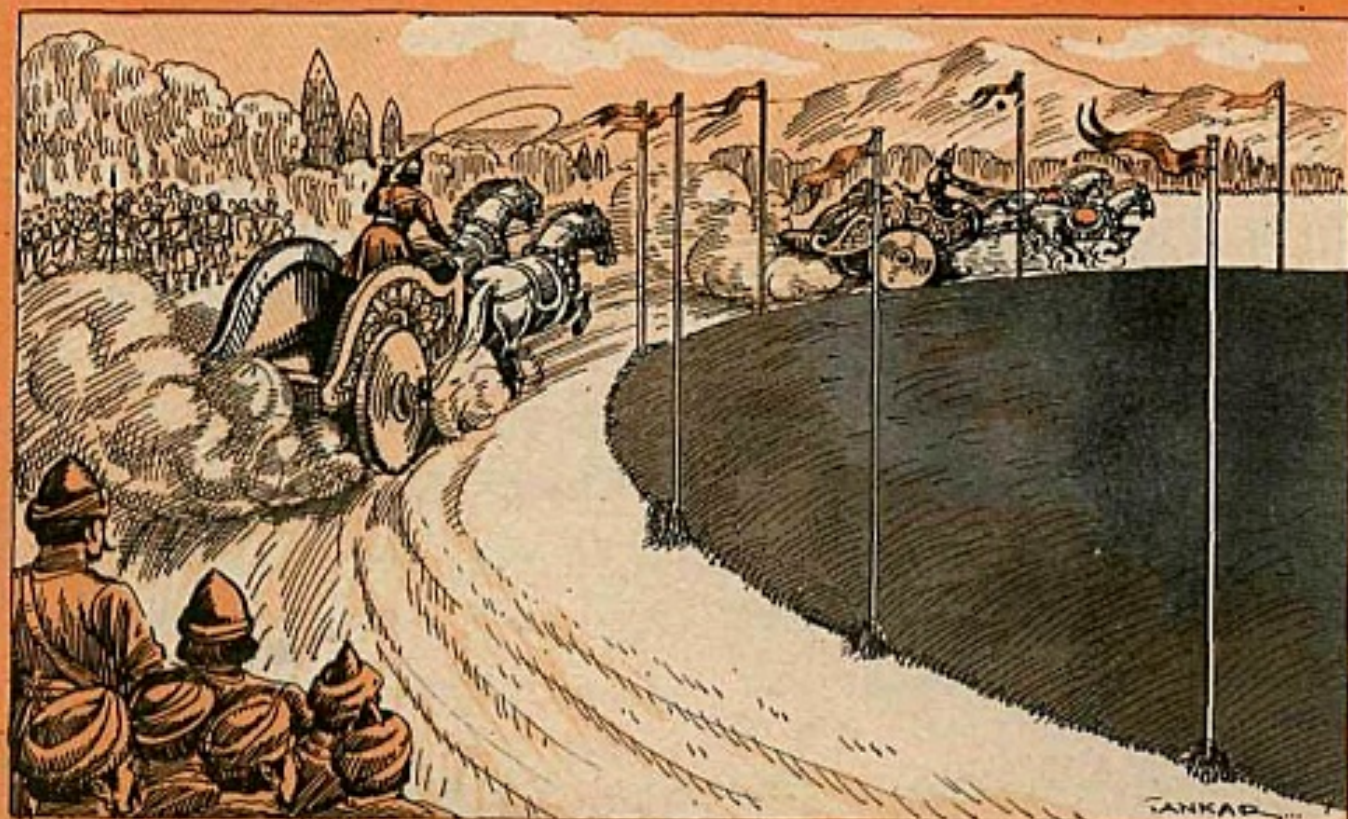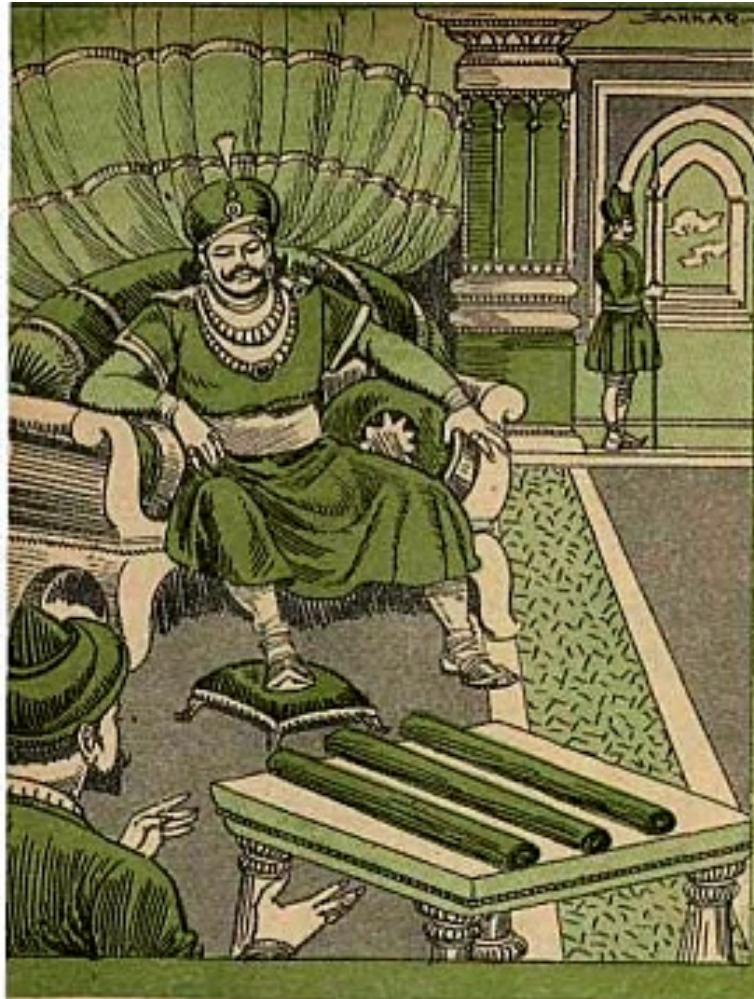
और उसका एक पहिया भी चूर चूर हो गया। लेकिन प्रसेन का रथ ज्यों का त्यों खड़ा था। इससे कमलानाभ की हार हुई।

इस घटना के बाद प्रसेन ने लंबाड़ी को काफ़ी धन दिया और उसे अपना प्रमुख सलाहकार बनाया। कमलनाभ की भी सलाह देनेवाली मायाविनी नामक एक बूढ़ी औरत थी। हारने पर कमलनाभ ने मायाविनी से सलाह माँगी–"इस अपमान का प्रतीकार करना है। प्रसेन को किसी भी उपाय से हमें जीतना है। कोई उपाय बता दो।" "उपायों की क्या कमी है, महाराज!" यह कहते मायाविनी ने कमलनाभ को एक बढ़िया सलाह दी।

इस घटना के कुछ दिन बाद कमलनाभ के दूत एक ही जाति की और बराबर लंबी तीन लकड़ियाँ लेकर प्रसेन के दरबार में पहुँचे और बोले–"हमारे राजा ने आपकी सेवा में ये तीन लकड़ियाँ भेजी हैं। ये तीनों लकड़ियाँ एक ही बार पेड़ से काटी नहीं गयीं। आपको यह बताना होगा कि इनमें से पहले कौन लकड़ी काटी गयी और कौन आख़िर काटी गयी। इस परीक्षा में आप हार जायेंगे तो आपको अपनी हार स्वीकार करनी पड़ेगी।"

"सोचकर जवाब दूँगा।" प्रसेन ने दूतों से कहा। प्रसेन ने लंबाडी को बुलाकर पूछा–"कमलनाभ ने एक और संकट ला खड़ा कर दिया है। इन तीन लकड़ियों को देख हमें यह बताना होगा कि कौन लकड़ी पहले काटी गयी, कौन बीच में और कौन आख़िर काटी गयी। तुम हमें कोई उपाय बता सकते हो?"

"महाराज, यह कोई बड़ी समस्या नहीं है। इन तीनों लकड़ियों को पानी में डलवा दीजिये। जो जल्दी डूबेगी, वह बहुत दिन पहले काटी गयी समझ लीजिये,

जो डूबेगी नहीं, वह कच्ची लकड़ी है, जो धीरे से डूबेगी, वह बीच में काटी गयी है।" लंबाड़ी ने उत्तर दिया।

प्रसेन ने इस परीक्षा के द्वारा लकड़ियों को कब कब काटा गया, निर्णय करके कमलनाभ के दूतों के हाथ जवाब भेजा।

"प्रसेन मुझसे भी ज्यादा होशियार मालूम होता है। मैं जिसका जवाब नहीं जानता, उसे उसने कैसे जान लिया?" कमलनाभ ने मायाविनी से पूछा!

"राजा क्या कहीं ऐसे भी अक़लमंद होते हैं? प्रसेन को कोई अक़लमंद सलाह देता होगा।" मायाविनी ने समझाया।

"ऐसा अक़लमंद अगर प्रसेन का सलाहकार हो, तो हम उसे कैसे हरा सकते हैं?" कमलनाभ ने संदेह प्रकट किया। "उसको मैं हटा सकती हूँ। आप हिम्मत न हारियेगा।" मायाविनी ने कहा।

एक दिन मायाविनी ने संन्यासिनी का वेश बनाया। प्रसेन से मिलकर बताया कि मैं हाथ देखकर भविष्य बता सकती हूँ। इसके बाद प्रसेन का हाथ देखकर कहा—"महाराज, आप भी कैसे भोले हैं? आप बिना सोचे-विचारे जिस आदमी को अपना सलाहकार बनाये हुए हैं, उसके जरिये आपके प्राणों का खतरा होनेवाला है!

आप जल्द उससे पिंड छुड़ा लीजिये। इसीमें आपकी ख़ैरियत है!" यह सलाह देकर मायाविनी अपने रास्ते चल दी।

प्रसेन का कलेजा धड़कने लगा। वह एक ही व्यक्ति की सलाह लेता है। वह लंबाड़ी है। वह कुलीन भी नहीं है। पर बड़ा अक़्लमंद है। ऐसा व्यक्ति विश्वासघात करने से नहीं चूकेगा। उसने निश्चय किया कि लंबाड़ी के ज़रिये उसके लिए खतरा पैदा हो सकता है। इस डर से उसने तुरंत अपने भटों को बुला भेजा और आदेश दिया–"लंबाड़ी के लिए समाधि बनाओ। उसको बीच में रखकर चारों तरफ़ ऊँची दीवारें बना दो।"

प्रसेन की पुत्री शुभांगी ने जब पहली बार लंबाड़ी को देखा, तभी से वह उससे स्नेह रखती थी। उसकी अक़्लमंदी का समाचार सुनकर वह लंबाड़ी से प्यार करने लग गयी थी। शुभांगी एक दिन अंतःपुर के झरोखे से बाहर देख रही थी। दूर पर राज दीवारें बना रहे थे। उसने मेस्त्री को बुलाकर पूछा–"यह तुम लोग क्या बना रहे हो?"

"प्रमुख सलाहकार लंबाड़ी की प्राणों के साथ समाधि बनाने का राजा ने आदेश दिया है।" मेस्त्री ने जवाब दिया।

शुभांगी चकित होकर बोली–"क्यों, लंबाड़ी ने कौन-सा अपराध किया है?"

"हम नहीं जानते, राजकुमारी।" मेस्त्री ने उत्तर दिया।

राजकुमारी ने अपने हाथ की अंगूठी निकालकर मेस्त्री के हाथ में देते हुए कहा–"सबकी आँख बचाकर दीवार में एक पत्थर ऐसा बिठा दो, जिससे होकर कोई बाहर-भीतर आ-जा सके। यह बात राजा को मालूम हो जाय तो तुम्हारा सर कटवा देंगे! खबरदार!" मेस्त्री ने ऐसा ही करने का वचन दिया और वहाँ से चला गया।

उस दिन शाम को शुभांगी उस समाधि के पास पहुँची और एक पत्थर हटाकर पुकारा–"लंबाड़ी!"

लंबाड़ी यह सोचते चिंता में पड़ा हुआ था कि आखिर राजा उस पर क्यों नाराज़ हो गये हैं! यह पुकार सुनते ही उसने चौंककर पूछा–"कौन हैं?"

"मैं राजकुमारी हूँ! तुम्हारे लिए खाना लायी हूँ।" शुभांगी ने कहा।

लंबाड़ी की जान में जान आयी। वह उस दरार के पास आकर खाना हाथ में लेते हुए बोला–"राजकुमारी! आपकी इस कृपा के लिए ज़िंदगी-भर कृतज्ञ रहूँगा। लेकिन क्या आप यह जानती हैं कि राजा ने मुझे यह मृत्युदण्ड क्यों दिया है? मैंने कोई अपराध नहीं किया है।"

"मेरे पिताजी के किसी ने कान भरे होंगे। वे जल्दी दूसरों की बातों में आ जाते हैं। सचाई कभी न कभी प्रकट होगी। कुछ दिन तक तुम्हें ये तक़लीफ़ें भोगनी ही पड़ेंगी। मैं तुम्हारे खाने का इंतज़ाम कर दूँगी। थोड़ा सब्र करो।" इस तरह लंबाड़ी को हिम्मत बंधवाकर शुभांगी चली गयी।

कमलनाभ को जासूसों के ज़रिये मालूम हुआ कि मायाविनी की चाल चल

प्रसेन यह सवाल सुनते ही घबड़ा उठा। आज तक जिस लंबाड़ी ने उसे इन कठिनाइयों से बचाया, वह अब तक मर गया होगा। इसलिए उसे लगा कि इस बार उसे कमलनाभ की गुलामी स्वीकार करनी पड़ेगी। प्रसेन की चिंता का कारण राजकुमारी शुभांगी ने भांप लिया और उसका कारण पूछा।

"पिताजी, मैं कई दिनों से पूछना चाहती थी कि आपने लंबाड़ी को मौत की सज़ा क्यों दी? लेकिन मैं भूलती जा रही हूँ।" शुभांगी ने कहा।

"बेटी, बिना सोचे-विचारे एक संन्यासिनी की बातों में आकर मैं डर गया कि लंबाड़ी मेरे साथ दगा करेगा। इसलिए उसे सजा दी। वास्तव में उसने मेरा उपकार ही किया है, लेकिन कभी मेरी हानि नहीं की।" राजा ने कहा।

"उस समाधि को तुड़वाकर देखिये, शायद वह ज़िंदा हो!" शुभांगी ने सलाह दी। "वह कभी का मर गया होगा। बिना खाने के वह इतने दिन तक कैसे ज़िंदा रह सकता है?" ये शब्द कहकर राजा ने समाधि तुडवा दी। लंबाड़ी न केवल ज़िंदा था बल्कि पहले से भी ज़्यादा तंदुरुस्त था।

निकली। उसने सोचा कि इस बार कोई परीक्षा रखेंगे तो प्रसेन को अपनी हार माननी पड़ेगी। क्योंकि लंबाड़ी या तो मरा होगा या मरने की हालत में होगा।

कुछ दिन और बीत गये। एक दिन प्रसेन के पास बारह युवक आये। सब की क़द समान थी। सब एक ही तरह की पोशाकें पहने हुए थे। उन युवकों ने प्रसेन से कहा—"राजन, हमको महाराज कमलनाभ ने आपके पास भेजा है। हम में से एक युवराज भी हैं। उनको अगर आप पहचान न सकेंगे तो आपको हार माननी पड़ेगी। वरना लड़ाई निश्चित है।"

राजा ने उससे क्षमा माँगी और इस नयी झंझट से बचाने की सलाह माँगी।

लंबाड़ी थोड़ी देर तक सोचता रहा, फिर बोला–"आज रात को उन बारह युवकों को देर से पीतल की थालियों में खाना दिलाइये। वे थालियाँ साफ़-सुथरी न हों! राजकुमार को छोड़ बाक़ी सब खाना खा लेंगे। तब मैं उपाय बताऊँगा कि आगे क्या करना है!"

उन बारहों युवकों को आधी रात के क़रीब खाना परोसा गया। "छी: छी:, ये थालियाँ कैसी? ये तो गंदी हैं। हम भोजन नहीं करेंगे।" युवकों ने कहा।

"आप लोग मुझे क्षमा कीजिये। मैं गरीब आदमी हूँ। प्रेम से जो खिलाता हूँ, उसे इनकार नहीं करना चाहिए। मेहरबानी करके खाना खाइये। रसोई बड़ी अच्छी बनी है। मेरे रसोइये खाना बनाने में प्रवीण हैं।" प्रसेन ने समझाया।

वास्तव में रसोई के व्यंजन बड़े रुचिकर थे। उनमें से अच्छी सुगंधी निकल रही थी। एक एक करके कई युवकों ने खाना शुरू किया। केवल एक जवान उस खाने को छुये बिना गंभीर बैठा रहा।

"महाराज, वही राजकुमार है जो बिना खाये बैठा है। उसे जेलखाने में

बन्दी बना डालिये।" लंबाड़ी ने कहा। राजा कमलनाभ ने जिन बारह युवकों को प्रसेन के पास भेजा था, उनमें ग्यारह युवक लौट आये और साथ ही प्रसेन का संदेश भी ले आये।

"आपको सलाह देनेवाली बूढ़ी का सर जिस दिन मैं अपनी आँखों से देखूँगा, उसी दिन मैं आपके पुत्र को सकुशल आपके पास भेज दूँगा। साथ ही आपको मुझे यह वचन देना होगा कि भविष्य में आप मुझे इस प्रकार तंग नहीं करेंगे।" यह संदेश लंबाड़ी की सलाह से प्रसेन ने कमलनाभ के पास भेजा।

अब कमलनाभ की चाल न चल सकी। वह बूढ़ी मायाविनी को साथ ले आया और प्रसेन के चरणों के पास डालकर बोला—"इसे आप जो सजा चाहे, दे दीजिये। लेकिन मेरे इकलौते बेटे को बचाइये। मैं अपने बाप-दादों की क़सम खाकर कहता हूँ कि आपको फिर कभी किसी प्रकार की तक़लीफ़ न दूंगा।"

प्रसेन की सारी तक़लीफ़ें दूर हो गयीं। कमलनाभ के पुत्र ने लंबाड़ी के ज़रिये सारी बातें सुनीं कि उनके पिता ने प्रसेन को कैसी तक़लीफ़ें दी हैं। इस पर उसने मान लिया कि प्रसेन का उसे बंदी बनाना स्वाभाविक ही है।

प्रसेन को भी जब यह समाचार मालूम हुआ कि लंबाड़ी का समाधि में मरने से बचने का कारण राजकुमारी शुभांगी ही है। उसने शुभांगी का विवाह लंबाड़ी के साथ कर दिया। उस विवाह के उत्सव में भाग लेकर कमलनाभ अपने पुत्र को साथ ले अपना देश लौटा।

कमलनाभ की मृत्यु के बाद उसका पुत्र और प्रसेन की मौत के बाद लंबाड़ी उन राज्यों के राजा हुए। तब दोनों के बीच स्नेह-संबन्ध और भी दृढ़ हो गये।

बेवकूफ़ी की दवा

अरब में एक जमीन्दार था। वह पशु और पक्षियों की भाषा जानता था। उसके पास एक घोड़ा और एक बैल थे।

एक दिन बैल ने घोड़े की झोंपड़ी में झांक कर देखा। वह एकदम साफ़-सुथरा था। बैल ने घोड़े से कहा–"भाई! तुम्हारी जिंदगी को क्या कहा जाय! तुम्हें तो काम कम है, उल्टे बढ़िया भोजन मिलता है! मेरी बात क्या कहूँ? बेगारी करनी है। खेत में कीचड़ के बीच काम करना है। खाने को रूखा-सूखा भूसा मिलता है।"

इस पर घोड़े ने बैल को सलाह दी–"दादा, मेरी बात मानोगे तो तुमको भी आराम मिल सकता है। तुमको खेत में जोतने के लिए ले जाने पर नीचे गिर जाओ। कोड़े भी लगावे तो भी पड़े ही रहो। भूसा डाले तो न खाओ। मालिक यह सोचकर तुम्हें आराम देगा कि तुम बीमार पड़ गये हो! खाने को तुम्हें दाना देगा, हरी-भरी घास देगा। तीन-चार दिन तक तुमको बढ़िया खाना और आराम दोनों मिल जायेंगे।"

जानवारों की बोली से परिचित मालिक ने दोनों जानवरों की बातचीत सुन ली। उस रात को चारा डालने पर बैल ने सूँघा तक नहीं। दूसरे दिन खेत में ले जाने पर वह लुढ़क पड़ा और ऐसा अभिनय करने लगा कि वह बीमार पड़ गया हो! मालिक ने अपने नौकरों से कहा–"तुम लोग इस बैल को ले जाकर घोड़ा ले आओ।" घोड़े से ज़ोतने का काम लिया गया। दिन-भर काम करके वह थका-माँदा शाम को घर लौटा।

"भाई, मैंने तुम्हारी सलाह का पालन कर दिन-भर खूब आराम किया।" बैल ने घोड़े से कहा। लेकिन घोड़े ने कोई जवाब नहीं दिया।

दूसरे दिन भी मालिक ने घोड़े से खेत का काम कराया। जुए के बोझ से उसकी गर्दन में फोड़ा निकला। उसका शरीर थककर शिथिल हो गया। खेत से लौटते ही घोड़े ने बैल से कहा—"दादा, तुम ज़रा सावधान रहो। मैंने सुना, मालिक नौकरों से कह रहा था कि कल भी बैल काम नहीं करता तो उसे कसाई के हाथ बेचकर उसके चमड़े से नया चप्पल बनवा दूँगा। अब आगे तुम्हारी जैसी इच्छा!"

इस पर बैल घबरा गया और बोला—"नहीं, नहीं, कल से मैं ही खेत में काम पर चला जाऊँगा। दो दिन मैंने जो आराम किया न!" यह बातचीत भी मालिक के कानों में पड़ी।

दूसरे दिन अपने मालिक को देखते ही बैल पूँछ हिलाते उछल-कूद करने लगा।

इसे देख मालिक ठठाकर हँसने लगा। उस वक़्त उसकी पत्नी उसके पास ही खड़ी हुई थी। उसने पूछा—"हँसते क्यों हो? ऐसी कौन बात हुई?"

"यह एक रहस्य की बात है! मैं नहीं बता सकता।" पति ने कहा।

"मुझे देखकर ही हँसते हो! इसीलिए नहीं बताते हो?" पत्नी ने कहा।

"मैं तुमको देख हँस नहीं रहा हूँ। यह बात कुछ और है।" पति ने समझाया।

"चाहे जो भी बात हो, मुझे बताओगे कि नहीं।" पत्नी ने ज़िद की।

"अगर कह दूँ तो मैं मर जाऊँगा। कैसे कहूँ?" पति ने पूछा।

"चाहे तुम भले ही मर जाओ, तुमको बताना ही पड़ेगा।" पत्नी ने हट किया।

अपनी पत्नी की ज़िद से तंग आकर मालिक ने निश्चय किया कि अब उसे मर जाने के लिए तैयार होना चाहिये। उसने अंतिम समय में अपने सभी रिश्तेदारों को देखने के ख्याल से सबको निमंत्रण भेजा।

दूसरे दिन सवेरे सभी रिश्तेदार दालान में जमा हुये। कालकृत्यों से निवृत्त होने के लिए ज़मीन्दार बाहर चला गया। वहाँ एक मुर्गा और एक कुत्ता थे।

मुर्गा मजे से इधर-उधर ठहलते कीड़े खा रहा था। कुत्ते ने उसके निकट जाकर पूछा–"अरे भैया, एक ओर हमारे मालिक मरने को तैयार बैठे हैं और तुम मजे से कीड़े खाते हो? तुम्हें दुख नहीं होता?"

मुर्गे ने पूछा–"हमारे मालिक मरते क्यों हैं? कोई कारण भी तो हो?" कुत्ते ने मुर्गे को सारी बातें समझा दीं।

"हमारे मालिक बेवकूफ़ हैं। उन्हें ज़रा भी अक़्ल नहीं। मेरे तो पचास मुर्गियाँ हैं। मैं उनसे खूब प्यार भी करता हूँ, लेकिन बेवकूफ़ी करने से उनके बदन छील देता हूँ। एक पत्नी के रखते हुए भी हमारे मालिक उसके हाथ का खिलौना बन बैठे हैं।" मुर्गे ने कहा।

ज़मीन्दार ने यह बातचीत भी सुनी। जब वह लौटा, अपने साथ दो इमली की छड़ियाँ ले आया। पत्नी को घर के अन्दर ले जाकर बोला–"तुमने जो रहस्य पूछा, बता देता हूँ।" यह कहते ज़मीन्दार ने अपनी पत्नी की पीट पर छड़ियों की वर्षा की।

"मुझे बचाइये। आपके पैरों पड़ती हूँ। मुझे ज़िंदा रहने दीजिये।" पत्नी ज़मीन्दार के पैरों पर गिरकर माफ़ी माँगने लगी। छड़ियाँ फेंककर ज़मीन्दार अपनी पत्नी को साथ ले रिश्तेदारों के सामने आया।

"मैंने अपनी पत्नी की इच्छा की पूर्ति की। चाहें तो आप लोग उससे पूछकर देखिये।" ज़मीन्दार ने कहा।

सभी रिश्तेदार बहुत प्रसन्न हुये। उस वक़्त खूब दावत उड़ा कर अपने-अपने रास्ते चले गये। इस के बाद फिर कभी ज़मीन्दार की पत्नी ने जिद्दी नहीं की।

राज-दण्ड

एक जंगल में एक बूढ़ा छोटी-सी झोंपड़ी बनाकर उसमें रहता था। उसके दिन आराम से कट जाते थे। लेकिन उसकी परेशानी यही थी कि उन मुर्गियों को जब-तब बिलाव आकर खा लेता था। बिलाव को फँसाने के लिए बूढ़े ने कई जाल बिछाये। मगर वे सब बेकार गये। इस बीच में वह मर ही गया। इसलिए उसकी सारी झंझटें दूर हो गयीं।

इस बार जब बिलाव मुर्गियों की खोज में आया तो उसने बूढ़े की लाश देखी। उसे बड़ी ख़ुशी हुई। उसने मन में सोचा—"वाह् बढ़िया खाना है। कई दिनों का शिकार मिल गया हैं। बैठे-बैठे पेट भर लूँगा।" यह सोचकर उसने बूढ़े की लाश को अपनी जगह खींच ले जाने की कोशिश की। लेकिन बिलाव के लिए यह काम ना मुमक़िन था।

वह किसी दूसरे की मदद के लिए इधर उधर ताक रहा था, तब उसे एक गिलहरी दिखायी पड़ी। उसने गिलहरी को बुलाकर कहा—"देखो गिलहरी! हम दोनों के लिए बहुत दिन का खाना हाथ लगा हुआ है, यह बूढ़ा अपने आप मर गया है। इसके कलेवर को अपने डेरे पर खींच ले जाने में मेरी मदद तो करो।"

गिलहरी ने बिलाव की बात मान ली। दोनों ने उछल-कूदकर खींचा, पर वह कलेवर टस से मस न हुआ।

इतने में उन्हें एक खरगोश दिखाई दिया। बिलाव ने खरगोश की भी मदद माँगी। तीनों ने आपस में बांटने का निश्चय किया। तीनों के खींचने पर भी कोई फ़ायदा न रहा। धीरे धीरे एक एक करके वहाँ पर एक सियार, एक भेड़िया और एक भालू

विवेक अग्रवाल

भी आये। सब ने कलेवर को बांटने का निर्णय किया।

"हम सब लोग ज़िंदगी-भर दोस्त बनकर सहजीवन करेंगे। सब मिलकर शिकार करेंगे और अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ उसे बाँट लेंगे।" इस तरह सबने मिलकर क़समें खायीं।

अब उनको उस कलेवर को कहीं खींच ले जाने की भी ज़रूरत न पड़ी। जब छठों के पेट भर गये तब बूढ़े की हड्डियों को छोड़ वहाँ पर कुछ न बचा था।

कुछ समय बाद सब के पेटों में फिर चूहें दौड़ने लगे। इस पर भालू ने सलाह दी–"दोस्तो, मैं भूख से परेशान हूँ। हमारा समाज अगर कोई उपाय नहीं करता तो मेरे प्राण उड़ जायेंगे। क्या करें?"

"तब तो यह बड़ी कठिन समस्या है! अब हम क्या करेंगे?" बाक़ी जानवरों ने एक स्वर में पूछा।

"करने को क्या है! हम सब मिलकर उस प्राणी को खायेंगे जो हम में सब से छोटा है! इस से बढ़कर हमारे प्राणों को रोकने का दूसरा कोई उपाय मेरी समझ में नहीं है।" भालू ने कहा। ये बातें सुनते ही गिलहरी झट से पेड़ पर जा बैठी। एक पेड़ से दूसरे पर कूदते भाग खड़ी हुई।

"देखा, तुम लोगों ने! इस गिलहरी में जरा भी स्नेह भाव नहीं है। वह अपने दोस्तों के लिए यह त्याग भी नहीं कर सकी!" ये शब्द कहते भालू खरगोश पर झपट्टा मारने को दौड़ा।

तुरंत खरगोश भी दौड़ गया और झाड़ियों में जा छिपा। आनेवाले खतरे की कल्पना कर विलाव भी दौड़ गया और पेड़ की टहनियों पर जा बैठा।

"हम छे लोगों में से तीन तो भाग खड़े हुए। वे हमारे स्नेही और विश्वासपात्र नहीं हैं। हम जो तीन बच रहे हैं, इन में तुम्हीं छोटे हो, इसलिए हम दोनों तुमको पकड़ कर खा लेंगे।" भालू ने सियार से कहा।

"मुझे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन इस अंधेरे में, वह भी इस छोटी-सी झोंपड़ी में क्यों? चलिये, पहाड़ पर। वहीं पर मैं तुम दोनों का आहार बन जाऊँगा।" सियार ने कहा।

भालू मान गया और पहाड़ की ओर चलने लगा। उसके पीछे चलनेवाले भेडिये से सियार ने धीरे से कहा—"भैया, मुझे खाने के बाद फिर तुम दोनों को भूख लगेगी, तुम दोनों तो क्या करोगे?"

भेडिये का चेहरा पीला पड़ गया। उसे यह समझते देर न लगी कि सियार के खाने के बाद भालू के आहार बनने की उसकी बारी आवेगी।

"यह इंतज़ाम अच्छा नहीं है! सह जीवन के नाम पर हम लोग शिकार खेलना छोड़, आपस में एक दूसरे को खा रहे हैं।" भेड़िये ने कहा।

इसके बाद भेड़िये ने भालू को वापस बुलाकर कहा—"हम दोनों सह जीवन के विरुद्ध अपना मत देते हैं। अब हम अपने अपने रास्ते आप जीयेंगे।"

भालू को उसकी बात माननी ही पड़ी।
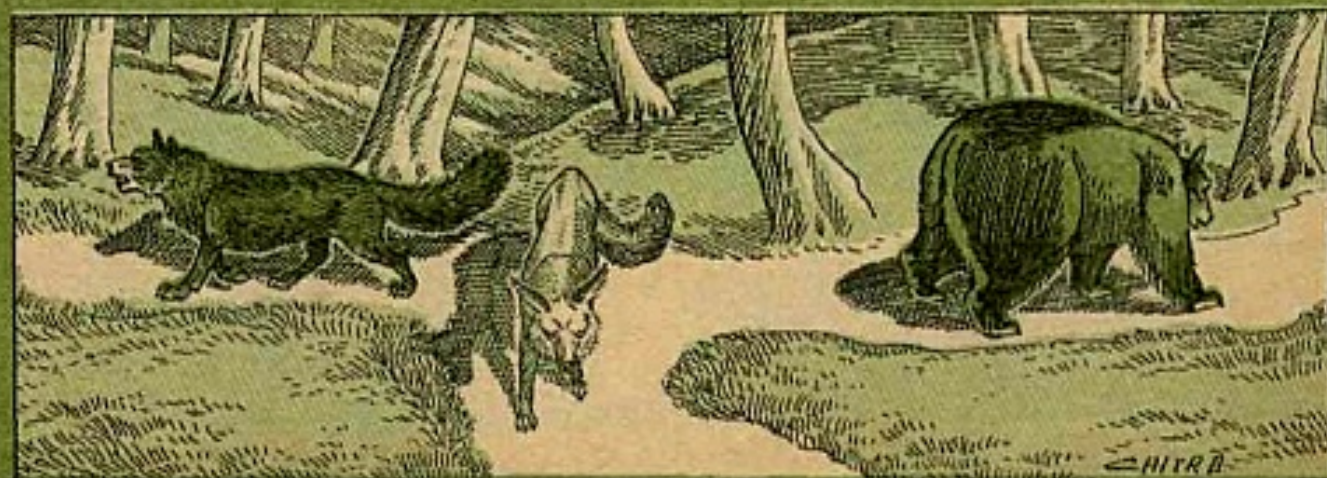
शुक्राचार्य ने जब ययाति को वृद्ध हो जाने का शाप दिया तब उसने उसके चरणों पर गिरकर गिड़गिड़ाते प्रार्थना की–"मुझे शाप देना आपके लिए उचित नहीं है। शर्मिष्ठा ने मुझसे पुत्र-भिक्षा माँगी, अगर मैं उसकी इच्छा की पूर्ति न करता, तो मुझ पर भ्रूण-हत्या का पाप लगता। इसीलिए मैंने उसकी इच्छा की पूर्ति की। लेकिन मेरे मन में देवयानी के प्रति अन्याय करने का विचार कभी न था। मुझे माफ़ कीजिये।"

"मेरा शाप कभी व्यर्थ नहीं हो सकता। यदि तुम कुछ और समय तक यौवन का सुख भोगना चाहते हो, मैं तुम्हें एक मौक़ा दे सकता हूँ। वह यह कि तुम अपने बुढ़ापे को किसी जवान को देकर उसके यौवन को तुम ले सकते हो!" शुक्राचार्य ने समझाया। इस पर ययाति ने सोचा कि पराये लोगों को अपना बुढ़ापा देकर उनसे यौवन माँगने के बदले, अपने पुत्रों में से किसी को मनवाकर उसे अपने बाद राजगद्दी देना उचित होगा। ययाति के इस विचार को शुक्राचार्य ने मान लिया।

तब ययाति बूढ़ा हो गया। उसका सर काँपने लगा। जोड़ों में ताक़त जाती रही। बाल पक गये। चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गयीं। दमे का प्रकोप हुआ। उस हालत में ययाति ने अपने बड़े पुत्र यदु को अपने शाप का समाचार सुनाया और पूछा–"बेटा, तुम थोड़े समय तक मेरा बुढ़ापा

३. शकुन्तला की कहानी

लेकर अपना यौवन मुझे दे सकते हो? मैं फिर अपना बुढ़ापा लेकर तुम्हें यौवन लौटा दूंगा।"

यदु ने ययाति की शर्त को स्वीकार नहीं किया। इस पर क्रुद्ध हो ययाति ने यदु और उसकी संतान यादवों को राज्य पर अधिकार न देने की धमकी दी। यदु ने ही नहीं, बल्कि ययाति के अन्य पुत्रों ने भी अपने पिता के बुढ़ापे को लेने से अस्वीकार किया। लेकिन शर्मिष्ठा के पुत्रों में से छोटे पुत्र पुरू ने अपने पिता की इच्छा की पूर्ति करने का वचन दिया। शुक्राचार्य की कृपा से ययाति ने अपने बुढ़ापे को पुरू को देकर, पुरू के यौवन को प्राप्त किया। इसके बाद विश्वाची नामक अप्सरा को साथ लेकर मनोहर प्रदेशों का विहार कर सुख भोगा। कुछ वर्ष बीतने के बाद ययाति ने पुरू को उसका यौवन देकर, वह फिर बूढ़ा हो गया और पुरू का राज्याभिषेक किया।

पुरू के पौष्ठी और कौसल्या नामक दो पत्नियां थीं। दोनों पत्नियों के पुत्र हुए। कौसल्या के पुत्रों की संतान में, जनमेजय की वंश-परंपरा में सोलहवीं पीढ़ी में दुष्यंत नामक एक पुत्र पैदा हुआ। दुष्यंत और विश्वामित्र की पुत्री शकुंतला के भरत नामक एक पुत्र हुआ।

विश्वामित्र की पुत्री का जन्म-वृत्तांत यों है—एक बार विश्वामित्र ने घोर तपस्या की। उस तपस्या को देख इंद्र भयभीत हो गया। उसने मेनका नामक अप्सरा को बुलाकर आदेश दिया—"विश्वामित्र घोर तपस्या कर रहे हैं। मुझे डर है कि उस तपस्या के पूर्ण होने से देवताओं को खतरा होगा। इसलिए तुम उनके पास जाकर अपनी सारी चातुरी का उपयोग करके विश्वामित्र की तपस्या भंग कर दो।

विश्वामित्र साधारण व्यक्ति न थे। वे राजवंश में जन्म लेकर अपनी तपस्या के बल पर ब्राह्मण हो गये हैं। स्वभाव से बड़े क्रोधी हैं। वशिष्ठ जैसे महान व्यक्ति को पुत्र-शोक पैदा किया। शाप के ज़रिये पतित बने त्रिशंकु के द्वारा विश्वामित्र ने यज्ञ कराया। इस पर डरकर इंद्र ने स्वयं हाविर्भाग ले लिया था। उस त्रिशंकु को ही विश्वामित्र ने अपनी शक्ति के बल पर स्वर्ग में भेजा। जब उसे देवताओं ने नीचे ढकेल दिया तब नीचे गिरनेवाले त्रिशंकु के लिए अंतरिक्ष में एक स्वर्ग का निर्माणकर उसे वहीं ठहराया। यह सब जानते हुए भी मेनका विश्वामित्र की तपस्या भंग करने के ख्याल से उसके आश्रम में आयी।

मेनका ने विश्वामित्र के दर्शनकर उसे प्रणाम किया और उसके आश्रम में विहार करने लगी। मेनका के वस्त्र हवा में फड़फड़ा रहे थे। उसके सौंदर्य को देखते विश्वामित्र का मन विचलित हो गया। विश्वामित्र के मन में उठे विकारों को देख मेनका को विश्वास हो गया कि उसकी इच्छा की पूर्ति होगी। आखिर वह उसके वशीभूत हो गयी। उनके दांपत्य के परिणाम स्वरूप मेनका के गर्भ से एक सुंदर कन्या पैदा हो गयी। मेनका उस शिशु को मालिनी नदी के तट पर निर्जन जंगल में छोड़ अकेली देवलोक में चली गयी।

उस जंगल में हिंस्त्र पशुओं का निवास था। इसलिए शकुंतल नामक पक्षियों ने अपने पंखे फैलाकर उस शिशु की रक्षा की। दुपहर के समय कण्व महर्षि स्नान करने के लिए जब उधर से निकले, तब उन्होंने शकुंत पक्षियों के पंखों की आड़ में उस शिशु को देखा। चारों तरफ़ आँख उठाकर देखा, लेकिन कहीं कोई मानव

मात्र न था। इसलिए उस शिशु को पास में स्थित अपने आश्रम में ले गये। उसका शकुंतला नामकरण किया और अपनी पुत्री की तरह पालने लगे। शकुंतला दिन प्रति दिन बढ़ती गयी। वह कण्व मुनि को अपना पिता मानकर आश्रम के सभी कार्य स्वयं करने लगी।

एक दिन राजा दुष्यंत मालिनी नदी के तट पर सदलबल शिकार खेलने आये। वहाँ पर उन्होंने कण्व महामुनि के आश्रम को देखा। उनको वह बहुत बड़ा आश्रम मालूम हुआ। मुनि कुमार वहाँ वेद-पठन कर रहे थे। कुछ लोग आग में हविष दे रहे थे। एक जगह अध्ययन और चर्चा चल रही थी। दूसरी जगह सामगान सुनाई दे रहा था।

राजा दुष्यंत ने अपने परिवार को वहीं ठहराया। वे खुद आश्रम में प्रवेशकर कण्व के कुटीर में आये। उस समय कुटीर में कण्व मुनि न थे। दुष्यंत की पुकार सुनकर कुटीर में से तापस स्त्री वेश में स्थित शकुंतला बाहर आयी। उसने दुष्यंत को देखते ही समझ लिया कि वे राजा हैं। तुरंत उसने राजा का अर्घ्य-पाद्य आदि से अतिथि-सत्कार किया और पूछा—"आप क्या चाहते हैं?"

बहुत ही कोमल व सुंदर शरीरवाली शकुंतला के आदर-सत्कार को देख दुष्यंत चकित हुए और बोले–"भद्रे! मैं इस जंगल में शिकार खेलने आया। कण्व महर्षि का आश्रम देख उनके दर्शन करने यहाँ पहुँचा। वे कहाँ गये हैं?"

"वे मेरे पिता हैं। फल और समिधा लाने जंगल में गये हैं। थोड़ी देर में वे आ जायेंगे।" शकुंतला ने उत्तर दिया।

शकुंतला के व्यवहार और सौंदर्य को देखते ही दुष्यंत उस पर मोहित हो गये। उनको मालूम ही था कि वह कन्या है। इसलिए दुष्यंत ने शकुंतला से फिर पूछा–"मैंने सुना है कि कण्व महर्षि ने ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया है। वे तुम्हारे पिता कैसे हुए? वास्तव में तुम किसकी पुत्री हो? इस आश्रम में कैसे आयी हो? तुमको देखते ही मेरा मन तुम्हारे प्रति आकृष्ट होता जा रहा है। सच्ची बात बताओ!"

शकुंतला ने अपना जन्म-वृत्तांत कण्व महर्षि द्वारा एक दूसरे मुनि को सुनाते सुन लिया था। इसलिए दुष्यंत को वे सारी बातें बतायीं।

"तब तो तुम राजकन्या हो! ऐसी सुन्दर कन्या और सुशीला होते हुए भी वल्कल पहने, कंद-मूल-फल खाते आश्रम
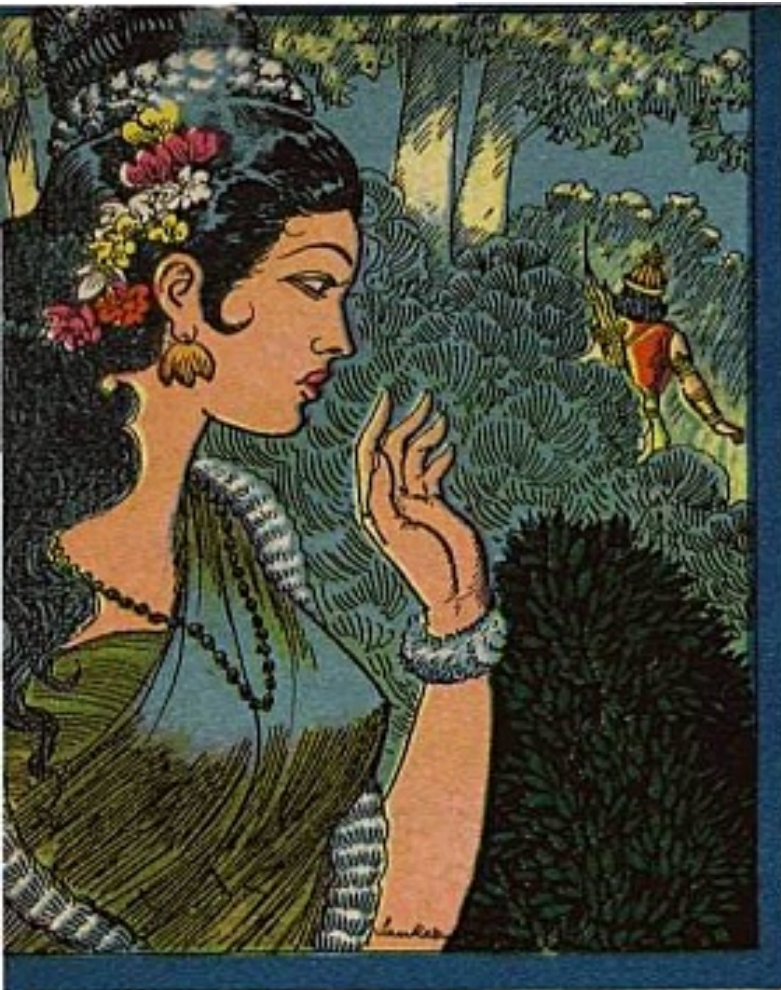
कहा–"देखो, मेरा मन तुम्हारे वास्ते छटपटा रहा है। क्षत्रियों में गांधर्व-विवाह चलता है। गांधर्व-विवाह के लिए मंत्र-तंत्रों की भी जरूरत नहीं पड़ती। वधू-वरों की इच्छा को छोड़ बड़े लोगों की अनुमति की भी आवश्यकता नहीं होती। यह रहस्य पूर्ण विवाह होता है।"

शकुंतला ने इस शर्त पर गांधर्व विवाह के लिए अपनी सम्मति दी कि उसके अगर पुत्र होगा, तो उसे दुष्यंत युवराज बनायेंगे। वे दोनों उसी क्षण पति-पत्नी बने। दुष्यंत ने शकुंतला से विदा लेते हुये कहा–"मैं राजधानी में लौटकर तुमको लाने के लिए आदमी भेजूंगा।" फिर शकुंतला को कई तरह से उन्होंने समझाया। उनके मन में यह डर भी था कि यह समाचार अगर कण्व मुनि को मालूम हो जायगा तो न मालूम वे क्या कर बैठेंगे। शकुंतला के मन में भी यह भय छा गया।

कुछ समय बाद कण्व महर्षि कंद-मूल-फल लेकर लौटे। हाथ-मुंह धोकर कुटीर में अपने आसन पर बैठे। शकुंतला डरते-लजाते आकर पास में खड़ी हो गयी। कण्व महर्षि ने अपनी दिव्य दृष्टि से सारी बातें जान लीं और कहा–"बेटी, तुमने

के कुटीर में तुम्हारा रहना मुझे अच्छा नहीं लगता। तुम मेरी पत्नी बनकर राजमहल के समस्त प्रकार के सुखों का भोग करो। मेरे राज्य की तुम्हीं रानी बनकर रहो।" दुष्यंत ने शकुंतला को समझाया।

"मेरे पिताजी के जंगल से लौटते ही उनकी अनुमति लेकर आप मेरे साथ विवाह कर सकते हैं।" शकुंतला ने उत्तर दिया।

दुष्यंत को स्पष्ट मालूम हो गया कि शकुंतला के मन में उसकी पत्नी बनने की इच्छा है। यह समझते ही दुष्यंत ने

योग्य वर के साथ ही विवाह किया। इस गांधर्व विवाह के फलस्वरूप चक्रवर्ती बनने योग्य पुत्र तुम्हें पैदा होगा। तुम्हारे मन में कोई कामना हो तो बताओ!"

"मेरे गर्भ से पैदा होनेवाला पुत्र दीर्घ आयु, ऐश्वर्यवान और शक्तिशाली हो, साथ ही वंश-कर्ता भी हो, यही मेरी कामना है।" शकुंतला ने अपने मन की बात कही। कण्व ने उसकी इच्छा की पूर्ति होने का आशीर्वाद दिया। तब शकुंतला का मन शीतल हो गया।

कुछ महीनों बाद शकुंतला ने एक पुत्र का जन्म दिया। कण्व महर्षि ने उस बालक का शास्त्र-सम्मत व क्षत्रियोचित जात कर्म किये। वह बालक दिन ब दिन बढ़ता गया। वह बालक छे साल की उम्र के आते आते सिंह, शेर व हाथियों पर चढ़कर घूमने लगा। उन जानवरों को आश्रम के पेड़ों से बांध देता। कभी कभी वह आश्रम के मुनियों को डराता भी था। इसलिए उसे सब आश्रमवासी 'सर्वदमन' कहकर पुकारते थे।

दिन बीतते गये। एक दिन कण्व मुनि ने शकुंतला को बुलाकर कहा—"बेटी, तुम्हारा पुत्र अभी युवराज बनने योग्य हो गया है। इसलिए उसका अपने पिता के पास रहना उचित होगा। तुम भी पति के रहते यहाँ पर कितने समय तक रह सकोगी? मैं तुमको तुम्हारे पति के पास भेजना चाहता हूँ।"

कण्व मुनि के कुछ शिष्य शकुंतला और उसके पुत्र को साथ लेकर दुष्यंत की राजधानी में गये। शकुंतला से अनुमति लेकर वे अपने आश्रम में लौट आये।

द्वारपाल ने शकुंतला और उसके पुत्र को राजा दुष्यंत के पास भेजा। लेकिन शकुंतला को देख दुष्यंत ऐसा व्यवहार करने लगे कि मानों उन्होंने शकुंतला को

पहचाना तक नहीं। इस पर शकुंतला का कलेजा धड़कने लगा। उसने राजा से कहा–"राजन, आप एक बार शिकार खेलते कण्व महर्षि के आश्रम में आये थे। क्या यह बात भूल गये? यह लड़का आपका पुत्र है। इसे युवराज बनाने का आपने वचन दिया है। मुझे अपने वश में करने के लिए अपने जो वचन दिया था, उसका उल्लंघन न कीजिये।"

दुष्यंत यह सब जानते हुये भी न जानने का अभिनय करते बोले–"दुष्टा, असल में तुम कौन हो? तुमको मैं बिलकुल नहीं जानता। बे मतलब की बातें करना छोड़ यहाँ से चली जाओ!"

शकुंतला दुख और क्रोध से काँप उठी। उसने दुष्यंत से कहा–"राजन, आप अपनी बात से मुकर रहे हैं! दूसरा कोई गवाह नहीं है, इसलिए झूठ बोलते हैं? हमारे विवाह का साक्षी आप ही हैं। आपकी अंतरात्मा भी। सत्य को छिपाना महान पाप है। जिस सद्भावना से उस दिन आपने मुझे अपनी बना ली, उसी सहृदयता से आज मुझे स्वीकार कीजिये। पशु-पक्षी भी अपनी संतान से प्रेम करते हैं। यह आपका पुत्र है। अपने पुत्र को 'नहीं' न कहियेगा।"

तब भी दुष्यंत में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। शकुंतला भयभीत थी।

उस वक़्त आकाश में से एक अशरीर वाणी सुनायी दी–"राजन, यह लड़का आपके द्वारा शकुंतला के गर्भ से पैदा हुआ है। प्रेम से इसका भार लीजिये। यह भरत नाम से प्रसिद्ध होगा।"

इस पर दुष्यंत का भय जाता रहा। सारे जगत में यह प्रकट हो गया कि शकुंतला उनकी पत्नी है और भरत उसी का पुत्र है। इसलिए उसने हिम्मत के साथ उन दोनों को स्वीकार किया।

[३]

मोहन का शाकाहारी होने का व्रत लेना एक तरह से लाभदायक ही सिद्ध हुआ। उन्होंने 'वेजटेरियन' नामक पत्रिका में नौ लेख प्रकाशित किये। उन में हिन्दुओं के आहार संबंधी नियम, आचार, पर्व-त्योहार आदि का ब्यौरा देते हुये थोड़ा हास्य का भी पुट दिया। लंदन के शाकाहार क्लब की कार्यकारिणी समिति के वे सदस्य हुये और अपने मुहल्ले में उन्होंने एक शाकाहार क्लब भी स्थापित किया।

गांधीजी ने तीन वर्ष इंग्लैण्ड में बिताये, उन दिनों में उन्होंने बाहरी दुनियाँ से कोई विशेष संबंध नहीं रखा। 'शाकाहर क्लब' के अलावा 'अंजुमन इस्लामिया' नामक एक और संस्था ने भी उनको अपनी ओर आकृष्ट किया। इस संस्था के सदस्यों में ज्यादा लोग भारतीय मुसलमान विद्यार्थी थे। वे जब तब छोटी-सी चाय-पार्टी रखते और राजनैतिक व सामाजिक विषयों पर चर्चाएँ करते। उन चर्चाओं में गांधीजी के साथ अब्दुल रहीम, मजहसल हक, महम्मद शफ़ी, सच्चिदानंद सिन्हा, हर किशनलाल गौबा भी भाग लेने लगे। गांधीजी उन चर्चाओं में कम बोलते थे, अन्य लोगों की तरह ज़ोरदार भाषण देना उन्हें मालूम न था।

गांधीजी जिन दिनों में इंग्लैण्ड में थे, उन दिनों में मार्क्स और डार्विन की विचारधाराओं ने राजनैतिक, वैज्ञानिक तथा साहित्य के क्षेत्रों में बड़ी हलचल मचा दी। मगर गांधीजी पर उस हलचल का प्रभाव न पड़ा। वे अकसर भगवद्गीता और बाइबिल पढ़ा करते थे। उन्होंने २० जून १८९१ में "वेजटेरियन" नामक

पत्रिका में लिखा था–"मेरे इंग्लैण्ड में रहते समय ऐसे काम बहुत थे. जिन्हें मैं नहीं कर सका। उस समय मैं माँस और शराब से दूर रहा, इस बात का मुझे बड़ा संतोष है।" उन दिनों में गांधीजी से जिन का परिचय था, वे कल्पना भी नहीं कर सकें कि गांधीजी आगे चलकर विश्व विख्यात व्यक्ति बन जायेंगे।

गांधीजी के इंग्लैण्ड में रहते समय ही उनकी माता का देहांत हो गया। लेकिन भारत लौटने पर ही उन्हें अपनी माँ की मृत्यु का समाचार मिला। यह खबर सुनते ही गांधीजी का दिल बैठ गया। क्यों कि
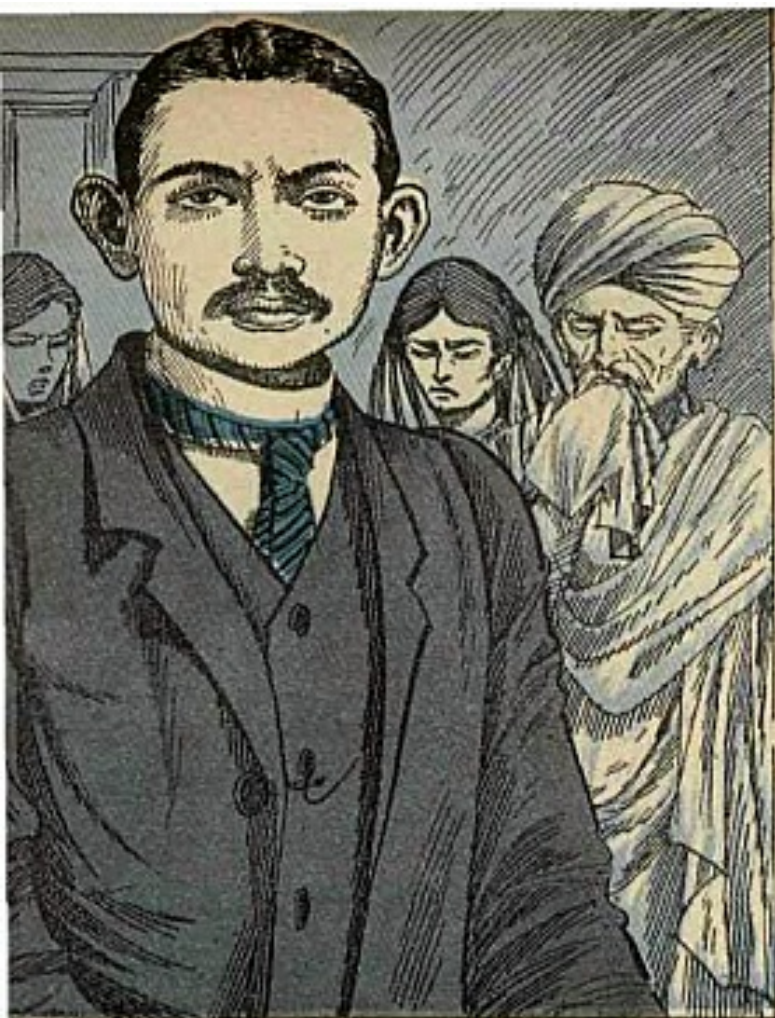
वह गांधीजी की जीवन-नैया के लिए पतवार के समान थीं। 'महात्मा' के रूप में दुनिया के द्वारा स्वीकार करने का मुख्य कारण गांधीजी पर उनका प्रभाव ही था।

गांधीजी के बड़े भाई ने यह विचार किया था कि बैरिस्टर बनकर लौटने पर वे लाखों रुपयों का अर्जन करेंगे। लेकिन प्रैक्टीस करने के लिए वे हिन्दू और मुस्लिम क़ानूनों से बिलकुल अपरिचित थे। राजकोट के निम्न दर्जे के वकील भी इस मामले में गांधीजी से कई गुने बेहतर थे। गांधीजी ने बड़ी लगन के साथ नयी नयी पुस्तकें पढ़ीं। नये वकील के लिए मुवक्किल मिलने से ही प्रैक्टीस चल सकती थी, परंतु गांधीजी की दृष्टि में यह काम बड़ा अरुचिकर था।

गांधीजी मे पहली बार जो मुक़द्दमा हाथ में लिया, वह मामीबाई नामक एक गरीबिन का था। फीस के नाम पर गांधीजी ने उस से तीस रुपये लिये। एक मुद्दई से जब कैफ़ियत तलब करनी पड़ी तब उनके दिमाग ने बिलकुल जवाब दे दिया। वे कुर्सी पर लुढ़क पड़े। इसके बाद उन्होंने अपनी मुवक्किल को रुपये वापस कर दिये। हम कल्पना कर सकते

हैं कि गांधीजी का पेशा जो इस तरह शुरू हुआ, वह बाद को उन के लिए कैसे संकट का कारण बना।

बंबई के एक हाईस्कूल में ७० रुपये मासिक वेतन पर अध्यापक का पद खाली था। गांधीजी ने प्रार्थना पत्र भेजा। लेकिन हाईस्कूलवाले शिक्षण संबंधी डिग्री चाहते थे। इसके बाद गांधीजी ने निश्चय किया कि दरख्वास्त लिखने की प्रतिभा उन में है, इसलिए यह पेशा उनके लिए अनुकूल होगा। वे राजकोट में बैठे दरख्वास्त लिखते मासिक ३०० रुपये कमाने लगे।

लेकिन इस पेशे में भी उन्हें अपमान का सामना करना पड़ा। एक बार गांधीजी अपने भाई के काम पर ब्रिटीश एजेंट के पास सिफ़ारिश करने गये। उस एजेंट ने गांधीजी का अपमान किया। अर्जियाँ लिखकर भी दिन काटना हो, तो भी गांधीजी को अकसर उस एजेंट से संपर्क स्थापित करना था। उन दिनों में ब्रिटीश अफ़सरों का आदर न प्राप्त कर सकनेवाले व्यक्ति को अपने पेशे को चलाना भी मुश्किल था।

इस हालत में गांधीजी को दक्षिण आफ्रिका से निमंत्रण आया। वहाँ पर ४० हजार पौंड की जायदाद को लेकर

मुक़द्दमा चल रहा था। यह तै हुआ कि गांधीजी को आने-जाने के लिए प्रथम श्रेणी का किराया और अन्य सब खर्च देकर एक सौ पाँच पौंड शुल्क दिया जायगा।

गांधीजी को इस बात का बिलकुल पता न था कि इस बार वे जो विदेशी यात्रा कर रहे हैं, उससे वे कैसे खरे निकलेंगे और जनता में लोकप्रिय होंगे। इसी भांति वह ब्रिटीश अफ़सर भी नहीं जानता था कि उसने गांधीजी को अपने घर से निकलवाकर ब्रिटीश साम्राज्य के लिए कैसे नुक्सान पहुँचाया!

गांधीजी १८९३ मई में डर्बन पहुँचे। उनको दक्षिण आफ्रिका में बुलानेवाला व्यक्ति अब्दुल्ला नेटाल के भारतीयों में से एक था। गांधीजी की पाश्चात्य शैली की पोशाक, उनकी कम अवस्था को देख अब्दुल्ला ने मन में सोचा कि यह व्यक्ति विपक्षियों के हाथों में बिक जायगा। परंतु अब्दुल्ला की यह शंका जल्द ही दूर हो गयी। वह समझ गया कि उसीकी भांति यह युवक बैरिस्टर भी धार्मिक दृष्टि से कट्टर है।

प्रिटोरिया के लिए रवाना होने के पहले गांधीजी डर्बन में एक सप्ताह ही रहें। गांधीजी ने वहाँ के वर्ण-विद्वेष का समाचार जान लिया। वे अब्दुल्ला के साथ अदालत में गये। मैजस्ट्रीट गोरे थे। गांधीजी को पगड़ी हटाने का आदेश दिया। गांधीजी इनकार करके अदालत से बाहर आये और स्थानीय पत्रिका में एक पत्र भेजा। उस पत्रिका ने गांधीजी की आलोचना करते लिखा—"गांधी बिंदी व काजल लगानेवाला बिन बुलाया मेहमान है।" वर्ण विद्वेष की ऐसी बातों से गांधीजी पहले अपरिचित थे। उन्होंने सोचा कि भारत में ब्रिटीशवालों का अहंकार उनके व्यक्तित्व से संबंधित है, परंतु इंग्लैंड के अंग्रेज बड़े ही सज्जन हैं!

संसार के आश्चर्य :

९०. "नीली" की पाठशाला

टर्की के सिवास नगर पर सन् १४०० में जब तामरलेन ने कब्ज़ा किया तब नगर की कंदराओं में ४००० आर्मेनिया के घुड़सवारों को ज़िंदा दफ़नाया। लेकिन उन्होंने इस सुंदर पाठशाला को नष्ट नहीं किया। इस पर कुरान की आयतें अंकित हैं।